केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार की ओर से भेंट ।

क्रांतिदूत
(उपन्यास)
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)
भारत सरकार की ओर से भेंट

डॉ० गणेश खरे

शांति प्रकाशन
इलाहाबाद

भूमिका
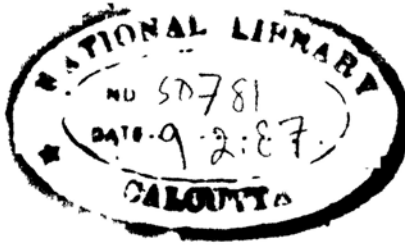
१६०५-६ से लेकर १६५४-५५ तक राजनांदगाँव का नाम देश के राजनीतिक तथा श्रमिक आन्दोलनों के इतिहास में अग्रगण्य रहा है। यहाँ ऐसी कुछ प्रमुख घटनाओं का नामोल्लेख किया जा रहा है जो प्रदेश तथा देश के इतिहास में सर्वप्रथम यहीं घटित हुई थीं—

(१) देश का प्रथम छात्र आन्दोलन १६०६-७ में।

(२) रियासत के दीवान के विरुद्ध जन-आन्दोलन १६०६-७ में।

(३) लोक कलाकारों द्वारा राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार-प्रसार का शुभारम्भ।

(४) देश का प्रथम श्रमिक आन्दोलन १८८० ई० के आसपास तथा देश का प्रथम संगठित मिल मजदूर आन्दोलन १६२० ई० में।

(५) गवर्नर के आदेश पर अंग्रेज पोलीटिकल एजेन्ट द्वारा (राजनांदगाँव रियासत से) निष्कासित नेताओं से क्षमा-याचना।

(६) देश के प्रथम राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना तथा शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं का विकास कार्य।

(७) श्रमिक महिलाओं द्वारा घेराबन्दी करके अपने बंदी सम्बन्धियों को पुलिस की हिरासत से मुक्त कराना तथा मिल-मजदूर आन्दोलन में देश का प्रथम शहीद (जरहू गोंड़)।

(८) छत्तीसगढ़ अञ्चल में सर्वप्रथम साइकिल का आगमन, विद्युत-व्यवस्था का विस्तार, (प्रथम विद्युत-व्यवस्था छुईखदान में) नल-व्यवस्था, कपड़े की मिल की स्थापना।

(९) सम्पूर्ण देश में कपड़े पर छपाई के लिए प्रसिद्ध बलराम प्रेस की

स्थापना तथा वहीं से "प्रजा हितैषी" नामक समाचार पत्र का प्रकाशन (छत्तीसगढ़ का प्रथम समाचार पत्र)।

(१०) देश की प्रथम नगरपालिका की स्थापना तब भारत में तत्संबंधी नियम भी नहीं बने थे।

(११) छत्तीसगढ़ में प्रथम रेलवे लाइन, स्टेशन, नागपुर से नांदगाँव तक—छत्तीसगढ़ पेनिनसुला रेलवे की नींव।

१२) मिल-प्रकरण में प्रथम चर्बी काण्ड।

(१३) सुन्दरता की दृष्टि से छत्तीसगढ़ का पेरिस कहा जाने वाला, लाल गुलाबों और उद्यानों का नगर—राजनांदगाँव।

(१४) देश में पहली बार यूनियन जैक को निकालकर उसके स्थान पर तिरंगा झंडा फहराने की घटना।

(१५) श्रमिक आन्दोलनों, हड़तालों, पिकेटिंग आदि के समय आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन तथा मिल के अंग्रेज अधिकारियों तथा आन्दोलनरत कर्मचारियों के मध्य होने वाले समग्र पत्राचारों को अपने पास बुलाकर गांधी जी द्वारा उनका अवलोकन और अपनी राय का निर्धारण।

(१६) जंगल-सत्याग्रह आन्दोलन मे देश का प्रथम शहीद—रामधीन गौड़।

(१७) पचास वर्षों से भी अधिक लम्बी अवधि में लगभग ४३ वर्षों तक राजनांदगाँव रियासत कोर्ट आफ वार्ड में रही तथा उसे स्वतंत्रता के पश्चात् सर्वप्रभुता सम्पन्न गणराज्य में संविलियत होने वाली पहली रियासत का गौरव प्राप्त।

(१८) लगभग इन सारी घटनाओं के मूल में छत्तीसगढ़ के गांधी कहे जाने वाले एवं देश में सहकारी आन्दोलन के जनक ठाकुर प्यारे-लाल सिंह का व्यक्तित्व तथा कृतित्व सक्रिय रहा है। वे स्वयं भूदान आंदोलन में देश के प्रथम शहीद होने वाले सेनानी रहे हैं।

'क्रांतिदूत' में इन सारी घटनाओं को एक क्रम-व्यवस्था के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है, किन्तु ऐतिहासिक आधार होते हुए भी यह कृति मूलतः इतिहास नहीं है। वस्तुतः इसमें इस शताब्दी के प्रथम पचास वर्षों के सम्पूर्ण परिवेश को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। एक निश्चित वस्तु-योजना के निर्माण तथा उसकी संरक्षा के लिए इसमें अनेक ऐतिहासिक पात्रों तथा तथ्यों को छोड़ा भी गया है और अनेक प्रसंगों तथा चरित्रों को संभाव्य कल्पना के द्वारा जोड़ा भी गया है। कथा के क्षेत्र में इतिहास सर्वथा बंधनकारी नहीं होता, यह बात मेरे ध्यान में सदा रही है।

श्री हरि ठाकुर (ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी के पुत्र) द्वारा लिखित ठाकुर प्यारेलाल सिंह की जीवनी तथा "अग्रदूत" का ठाकुर प्यारेलाल सिंह विशेषांक मेरे प्रमुख ऐतिहासिक आधार रहे हैं। इनके अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, रियासती वातावरण आदि की जानकारी के लिए अनेक जानकार लोगों से साक्षात्कार भी लिए गए। इनमें से अधिकांश साक्षात्कार ध्वन्यांकित रूप में शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के पुस्तकालय में सुरक्षित रूप से रख भी दिये गये हैं।

एक ही स्थान तथा व्यक्ति में निहित देश के इतिहास को क्रांति की नयी दिशायें प्रदान करने वाली ये विशेषताएँ अपने आप में विस्मय और आह्लादक रही हैं, किन्तु इन्हें आधार बनाकर और सही-सही नाम देकर (जिनमें से अनेक व्यक्ति आज भी साक्ष्य रूप में हमारे बीच विद्यमान हैं) एक कथा-कृति की रचना करना मेरे लिए बहुत बड़ी चुनौती का कार्य रहा है, इसे मेरे रचनाकार ने सहज अन्तः प्रेरणा द्वारा स्वीकार किया, इसे ही मैं अपनी असली उपलब्धि मानता हूँ।

पं० किशोरीलाल शुक्ल के छात्र-मित्र का सही नाम (अध्याय ८-९) यूसुफ अली था जिसे प्रथम संस्करण में भूल से महमूद लिख दिया गया

था, इसे द्वितीय संस्करण में उसे सुधार दिया गया है। इसी तरह जंगल सत्याग्रह (अध्याय १८) के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण नेताओं के नाम भूल से रह गये थे और कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम जुड़ गये थे जो वस्तुतः उद्घाटन-अवसर पर नहीं थे, इन सबको भी यथा स्थान सुधार दिया गया है।

१२ वें अध्याय में गंगाधर राव का प्रसंग आया है जो मिल का एक लिपिक था। श्री हरि ठाकुर की पुस्तक में यही नाम ऐतिहासिक माना गया है, किन्तु पं० किशोरीलाल शुक्ल का कथन है कि श्री गंगाधर राव एक श्रमिक नेता थे और ठाकुर प्यारेलाल सिंह के साथ उनका भी रियासत से निष्कासन किया गया था। अतः यदि कोई क्लर्क था तो उसका नाम कुछ दूसरा रहा होगा। विवाद से बचने के लिए मैंने उसका नाम प्रभाकर राव कर दिया है।

प्रकाशन के ६ माह की इस अल्प अवधि में ही प्रस्तुत कृति पर ढेरों प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं। कुछ समीक्षकों ने इसे देश के इतिहास में छत्तीसगढ़ की गौरवपूर्ण उपलब्धियों को पहली बार प्रस्तुत करने वाली कृति की संज्ञा दी है, किन्तु इसका निर्णय करना सुधी पाठकों का कार्य है।

१८-५-८४ —गणेश खरे

एक

"तुम्हारे जीवन का उद्देश्य ?"

"क्रान्ति।"

"क्रान्ति का अर्थ भी जानते हो ?"

"अंग्रेजो की गुलामी और जमीदारो, सामंतो तथा राजा-महाराजाओ के शोषण से मुक्ति के लिए आन्दोलन ?"

"क्या यह सम्भव है ?"

"असम्भव कुछ नहीं होता।"

"बेटे ! लगता है तुम गुमराह हो रहे हो। पढ़ने-लिखने में अच्छे हो, खेलने मे कहना ही क्या ? शाला के नायक भी हो और तुम्हारे विचार इतने दूषित ? मैं आज ही तुम्हारे पिता जी से कहूँगा कि तुम्हारी संगति बिगड़ रही है ?" हेडमास्टर सन्तराम ने कहा।

"कोई लाभ नही होगा गुरु जी ! मेरे पिता जी अच्छी तरह जानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिये क्योंकि वे स्वयं शिक्षा-विभाग मे कार्य करते हैं।" प्यारेलाल ने उत्तर दिया।

"शिक्षा के उद्देश्य बहुत होते हैं, पर उनका एक व्यावहारिक पक्ष भी होता है, पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त करना....।"

"और इस तरह अंग्रेजों की गुलामी करना !"

"बेटे ! मैं तुम्हारा शिक्षक ही नहीं, अभिभावक भी हूँ। तुम्हारे पिता जी मेरे अच्छे मित्रों में से एक हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़-लिख कर आदमी बनो।"

"मास्टर साहब ! जो शिक्षा हमारे अधिकार छीन ले, हमें आदमी से पशु बना दे, वह सोने की वर्षा भी करे तो मुझे पसन्द नहीं है।"

"लगता हैं तुम क्रान्तिकारियों के चक्कर में पड़ गये हो वरना तुम्हारी यह किशोरावस्था चुपचाप पढ़ने की है, क्रान्ति, शिक्षा, गुलामी,

स्वतन्त्रता, मातृभूमि जैसे विषयों की विवेचना की नहीं। कौन-सा अखबार पढ़ते हो आजकल ?"

"आर्यावर्त और विश्वमित्र।"

"अब समझ में आया—कभी-कभी ये समाचार-पत्र भी नयी पीढ़ियों को इतना दिग्भ्रमित कर देते हैं ?"

"या जीवन का लक्ष्य निर्मित कर देते है ?" प्यारेलाल ने प्रश्न किया।

"अभी तुम्हारी १५-१६ वर्ष की कच्ची उम्र है। तुमने दुनिया देखी ही नही। देश प्रेम के एक अंधे उन्माद ने तुम्हें पागल बना दिया है। बंगाल के क्रान्तिकारी क्या कर रहे हैं, भूल जाओ। नांदगाँव का वातावरण बिल्कुल दूसरा है। क्या तुमने पढ़ा नही कि जब रोम में रहो तो रोम के निवासियो की तरह ही व्यवहार करो ?"

"गुरू जी ! रात-दिन पढ़ता हूँ, केवल पढ़ता ही नही, विचार भी करता हूँ, अपने साथियों से विवाद भी करता हूँ और बार-बार इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अन्यायो के अंधकार में डूबे हुए समाज में यदि प्रकाश की किरणें नही ला सके, स्वतन्त्रता के मुक्त आकाश में साँस नही ले सके तो पढ़ना भी बेकार है और जीना भी।"

"सुना है, तुमने आजकल एक सरस्वती वाचनालय भी खोल रखा है ?"

"ठीक ही सुना है आपने ?"

"वह वाचनालय है या क्रान्तिकारियो का अड्डा ?"

"जैसा आप समझें ?"

"मेरे समझने से काम नही चलेगा, तुम वास्तविकता को समझो। और अभी भी सही मार्ग पर आ सकते हो।"

"गुरू जी ! इससे अधिक सही मार्ग जीवन का और क्या हो सकता है ?"

"हो सकता है।"

"क्या ?"

"देश-द्रोही गतिविधियों से हटकर एक सभ्य नागरिक बनो।"

"गुरू जी ! देश-द्रोह क्या है—मातृभूमि की स्वतन्त्रता मे सहयोग देना या इस कार्य में बाधक बनना ?"

"प्यारेलाल ! मुझे तुमसे इस विषय मे विवाद नही करना है। मैने अपना काम पूरा कर दिया। रियासत के दीवान ने मुझे निर्देश दिया था कि तुम्हें समझा दूँ।"

"कौन, अहमद साब ने ?"

"हाँ !"

"१०८ चूहे खाकर बिल्ली अब हज करना चाहती है। नामुमकिन है गुरू जी ! मुझे क्षमा करना, मैं चला।"

"रुको, इस तरह भागने से समस्यायें हल नही होगी। सुना है, तुम अब दीवान के विरुद्ध भी लोगों को भड़का रहे हो ?"

"सही-सही बातें कहने का मतलब क्या भड़काना होता है ?"

"पर इसका परिणाम जानते हो ?"

"सत्य की सदा विजय होती है, मास्टर साहब !" प्यारेलाल ने विश्वासपूर्वक कहा।

"मेरे बेटे ! यह रास्ता बहुत खतरनाक है। इसमें जगह-जगह गहरी-गहरी खाइयाँ हैं और…"

"दीवन साहब, मुझे अपनी ताकत से कभी भी और किसी भी खाई में फिकवा सकते हैं ? यही न ?"

"लाल ! पानी में रहकर मगर से बैर नही किया जाता। यह हमारे धर्मशास्त्रों में भी लिखा है।"

"गुरू जी ! मैं भी इस विषय पर आप से तर्क नही करना चाहता। हमारी राहें अलग अलग हैं। आप रियासत की नौकरी में हैं और हम रियासत के अत्याचारों को चुनौती दे रहे हैं। क्या आप यह पसंद करेंगे कि दीवान के द्वारा जो ज़ुल्म गरीब, अनपढ़ जनता पर ढाये जा रहे, हैं

उनका समर्थन आपके शिष्य भी करें ? क्या मैं भी दूसरों की तरह अपनी आँखें बन्द कर गूंगा, बहरा बन जाऊँ ? आदमी वह है जो अत्याचारों के विरुद्ध खड़ा हो सके। सत्य के तेज को सहने की सामर्थ्य किसी में नहीं होती।"

"लगता है, तुम्हारे मानस में क्रांति की जड़ें काफी गहरी उतर चुकी हैं। मैं अब तुम्हारे पिता जी से ही चर्चा करूँगा।"

"जैसी आपकी इच्छा, गुरुजी।" कहकर प्यारेलाल प्रधान अध्यापक के कमरे से बाहर निकले। पं० सन्तराम शर्मा के सारे अस्त्र कुण्ठित हो गये थे अतः वे उदास हो गये।

शाम को वे प्यारेलाल के पिता ठाकुर दीनदयाल सिंह जी से मिलने उनके घर गये थे। उन्होंने भी साफ-साफ कह दिया—"शर्मा जी ! मेरी समझ में खुद नहीं आता कि प्यारेलाल को आजकल क्या होता जा रहा है। उसकी माँ का कहना है कि अब तो वह खाने-पीने के लिए भी समय नहीं निकाल पाता। हर शनिवार-रविवार या त्यौहार की छुट्टी में गाँवों की ओर निकल जाता है खुद खादी पहनने लगा है और उसका ही प्रचार-प्रसार करता है। प्रायः हर दिन सबेरे-सबेरे यह कहकर निकल जाता है कि वाचनालय जा रहा हूँ। फिर ९-१० बजे लौटता है। खाना खाकर स्कूल और शाम को फिर वाचनालय। रात्रि में भी १० बजे लौटता है। कुछ पूछता हूँ तो एक ही उत्तर - पढ़ाई कर रहा हूँ।"

"यही तो मैं कहने आया हूँ कि उसकी पढ़ाई अब खतरनाक होती जा रही है।"

"उसकी आँखों में एक विशेष प्रकार की चमक है, मन में दृढ़ विश्वास है, हाथों में कुछ करने के फौलादी इरादे हैं। मस्तक उन्नत है। मैं सोचता हूँ, ये खतरनाक अध्ययन के लक्षण नहीं हैं शर्मा जी !" दीनदयाल ने कहा।

"मेरा मतलब है कि उसकी संगति और गतिविधियाँ संदेहास्पद हैं।

वह बंगाल के क्रान्तिकारियों के चक्कर मे फंसता जा रहा है, 'विश्वमित्र' जो पढ़ता है।"

"शर्मा जी ! अब वह युवा हो गया है। तर्क-वितर्क करता है, खुद निर्णय लेने लगा है, अंधानुकरण नही करता। सत्य पर दृढ़ रहता है अतः मैं आपकी इन बातों को कैसे मान लूं ? देखो, आज ही सबेरे कह रहा था कि हमारे स्कूल की गवर्निंग बाडी ने छात्रों की फीस आठ रुपये प्रति माह कर दी है जबकि मध्यप्रदेश के किसी भी स्कूल में इतनी फीस नही ली जाती। यह गरीबों के प्रति अन्याय है, उनका शोषण है। शिक्षा को सुलभ बनाने के स्थान पर अब दुर्लभ बनाया जा रहा है। इतना ही नही, अब छात्रों के लिए एक निश्चित यूनीफार्म पहनना अनिवार्य कर दिया है। गरीब छात्र इतना महंगा यूनीफार्म कैसे खरीद सकते हैं ?"

"यह क्या कह रहे है आप ?" शर्मा जी ने घबड़ाते हुए कहा। "आपने उसे समझाया नही ?"

"समझाने का प्रश्न ही नही उठता। बोलो क्या वह गलत कह रहा है ?"

"पर इतनी फीस लेना तो जरूरी है वरना पैसा कहाँ से आवेगा ? और यूनीफार्म तो होना ही चाहिए, उसमें खराबी क्या है ?"

"मैंने कहा था लाल से। उसका उत्तर सुनोगे—कहता था, "रियासत के पास पैसों की कमी नहीं है। पैसा दीवान साहब के बंगले की नालियों में शराब के रूप में बह रहा है। स्टेट चाहे तो सभी छात्रों को अपनी ओर से यूनीफार्म का प्रबन्ध कर सकती है पर वस्तुतः यहाँ तो शिक्षा के नाम पर गरीबों के प्रति अमीरों का षड्यंत्र चल रहा है ताकि गरीब, गरीब और अपढ़ ही बने रहें। शिक्षा के नाम से इधर विद्यार्थियों को गुलामी पिलाई जा रही है। उनके स्वाभिमान को कुचला जा रहा है, उनके हाथों को निकम्मा किया जा रहा है, उन्हें आदमी से रट्टू तोता बनाया जा रहा है....." आप खुद बतायें मैं लाल के इन प्रश्नों और निष्कर्षों का क्या उत्तर देता, चुप रह गया।"

शर्मा जी भी चुप रह गये थे और फिर धीरे से उठकर अपने घर आ गये थे। उस रात्रि को उनका आँखों में एक पल भी नींद नहीं आ सकी थी।

दूसरे दिन सबेरे प्यारेलाल के नेतृत्व में स्कूल के सारे लड़के सड़क पर जुलूस निकालते हुए नारे लगा रहे थे—हमारी फीस कम करो, यूनीफार्म बन्द करो, हम सब छात्र एक हैं। छात्र एकता जिन्दाबाद। वंदे मातरम्।'' जुलूस स्कूल से निकलकर दीवान और पोलीटिकल एजेंट के बंगलों से होता हुआ गोल बाजार में सभा के रूप में बदल गया था। प्यारेलाल ने बिना लाउडस्पीकर के ही ऊँची आवाज में कहा—''भाइयो! शिक्षा प्राप्त करना हम सबका जन्मसिद्ध अधिकार है। फिर क्यों हमसे आठ-आठ रुपये फीस लेने का निर्णय लिया गया है। यह स्कूल वस्तुतः गरीबों को शिक्षा देने के लिए ही खोला गया था। मैं इसका इतिहास आपको बताता हूँ। युवराज बलरामदास की शिक्षा के लिए यहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी। अतः विवश होकर महंत राजा घासीदास जी को उन्हें जबलपुर भेजना पड़ा था। घासीदास जी स्वयं यहाँ शिक्षा की व्यवस्था के लिए उत्सुक थे, पर उनका आकस्मिक रूप से निधन हो गया। एक दिन रानी सूर्यमुखी ने बलरामदास जी से कहा—क्या आप सोचते हैं, अपनी रियासत की उन्नति बिना शिक्षा-व्यवस्था के हो सकती है? आपके समान यहाँ के सभी बच्चे जबलपुर या नागपुर तो नहीं जा सकते? क्यों नहीं यहाँ की जनता के बौद्धिक विकास के लिए एक स्कूल खोल देते? राजा बलरामदास को भी शिक्षा की कमी अखर रही थी। अतः उन्होंने १८८६ में विद्यालय खोला था–यह ''घासीदास एंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल।'' महारानी ने इस संस्था के लिए अपने जनाना अस्पताल के दो कमरे भी प्रदान किए थे। आरम्भिक २० वर्षों तक इस स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती थी पर १९०५ में सहसा यहाँ पाँच आने प्रति बच्चे के हिसाब से फीस लेने का निर्णय किया गया। दो-चार महीनों में फीस बढ़ाकर तीन रुपये कर दी गई और साल पूरा नहीं हो

पाया - फीस आठ रुपये बढ़ा दी गई है। यह इस रियासत की गरीब जनता पर भयानक अत्याचार है। इतना ही नहीं, पूर्वी रियासतों के जो विद्यार्थी यहाँ पढ़ने आए हैं उनका भी शोषण किया जा रहा है।

"आपको मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि पहले स्कूल के बच्चों का कोई यूनीफार्म नही था, पर अब आदेश निकाला गया है कि मिडिल स्कूल के सारे बच्चे काला कोट, सफेद हाफ पैंट, काली फैल्ट कैप ही पहन कर स्कूल आयें। कैप के दाहिने, बायें किनारे पर लाल, हरी, तिरंगी पट्टियाँ भी पिन से लगी होनी चाहिए। आपको शायद पता न हो, अब एक विशेष दरबार ड्रेस भी अनिवार्य कर दी गई है जिसे अंग्रेज अफसर, दीवान, राजा आदि के आगमन के समय उनके स्वागत-रूप में हम बच्चों को पहनना अनिवार्य है। प्रति शनिवार को अब १२ बाजों वाले बैंड के साथ अंग्रेजी ट्यून पर म्यूजिकल ड्रिल भी आरम्भ की गई है—ये सब इसलिए कि अंग्रेज प्रसन्न हों। शिक्षा के नाम पर इससे बड़ा कलंक और क्या हो सकता है? भाइयो, हमें इन सबका जमकर विरोध करना है। क्या इतनी मंहगी और पतनशील शिक्षा आप सब बरदाश्त कर सकेंगे?"

उधर पोलीटिकल एजेन्ट ने दीवान को बुलाकर पूछा—"तुमने यह पहले क्यों नहीं बताया कि फीस बढ़ाने से आन्दोलन हो सकता है? बच्चे ठीक कह रहे हैं—इतनी मँहगी यूनीफार्म वे कैसे खरीद सकते हैं? यू इंडियन्स, डू नाट नो हाऊ टू बिहैव विथ चिल्ड्रन। अपने बच्चों की शिक्षा में भी बाधायें खड़ी करते हों? दिस इज यूवर नेशनल कैरेक्टर? फीस तत्काल कम करो, यूनीफार्म अगर जरूरी हो तो रियासत की तरफ से प्रदान करो। बच्चों से कहो—अपनी कक्षाओं में जायें। बुलाओ अपने हेड मास्टर को और कहो—भविष्य में फिर कभी किसी प्रकार के एजीटेशन का मौका न दिया जाये। अक्ल का इस्तेमाल करो। स्टूडेन्ट्स आर बर्निंग फायर, नेवर टच देम।"

प्यारेलाल को प्राप्त इस सफलता ने उन्हें छात्रों का बेताज का

बादशाह बना दिया। पर दीवान और हेडमास्टर संतराम शर्मा के मन में देश का यह प्रथम छात्र आन्दोलन सर्प की तरह कुण्डली मारकर बैठ गया।

●

दो

●

सबेरे का समय। एक बड़ी आराम कुर्सी पर बैठे हुए मोटे भरकम दीवान साहब हुक्का गुडगुड़ा रहे थे। तभी कुछ सिपाहियों ने उनके सामने लगभग घसीटते हुए हल्कू और चमरू को पेश किया।

"कौन हैं ये लोग ?" दीवान ने गरजकर पूछा।

"फूलपुर गाँव के किसान, सरकार !" पेशकार ने उत्तर दिया।

"क्यों ?"

"सरकार ! इस हल्कू ने अपने खेत में से राजा साहब के बैलों को दूसरे खेत में हाँक दिया था।"

"इसकी इतनी हिम्मत ! तेरे बाप का खेत है रे क्या ?"

"नहीं सरकार ! मैं तो अपने खेत की मेड़ पर खड़ा था। मुझे देखकर ही वे दूसरे खेत में चले गये।"

"इतनी जगह छोड़कर तुझे मेड़ पर ही खड़े होने के लिए स्थान मिला ?"

"सरकार ! मैं तो वहाँ पहले से ही खड़ा था। अपने खेत की रखवाली कर रहा था। जंगली सुअर, गाय, बैल....धान की बालें अब पक जो पड़ी हैं ?"

"सो तुमने राजा साहब के बैलों को भी भगा दिया ? क्या तुझे यह भी बताना पड़ेगा कि राजा साहब के गाय, बैल जहाँ जो चाहे, चर सकते हैं ?

'मालूम है सरकार !"

'तो फिर तूने जान-बूझकर इतना बड़ा अपराध किया है ? यह

हमारे राजा साहब का अपमान है। पेशकार ! इसे उसी गाँव के आदमियों के सामने १५ कँटीले कोड़ों की सजा दी जाये और इसकी खड़ी फसल और खेत जब्त कर लिए जायें। ले जाओ, इस सुअर की औलाद को मेरे सामने से।"

"जी सरकार !" पेशकार ने कहा।

"और इसने क्या किया है ?"

"हुज़ूर ! इस चमरू ने गोंटिया के आँगन से कुछ मिर्ची चोरी की है ?"

"नही सरकार ! मैं भला मिर्ची का क्या करता। गोंटिया साहब ने कहा था कि राजा साहब के हिस्से का पाँच बोसी चारा राजमहल तक पहुँचा दो। मैंने केवल इतना कहा कि मुझे १५ दिनों से बुखार आ रहा है, कल या परसों पहुँचा दूँगा मालिक !"

"पेशकार ! इसका बुखार उतारा गया या नहीं ?"

"वह तो गोंटिया साहब ने उसी समय उतार दिया था सरकार !"

"लगता है, ठीक तरह से नही उतरा, १५ दिन से आ रहा है न ? इसे पन्द्रह जूते और लगाये जायें ?"

"सरकार ! मर जाऊँगा माई-बाप ! मुझ पर दया करो, आपके पाँव .."

"पेशकार ! इसने मिरची चुराई है न ?"

"कितनी ?"

"यही कोई एकाध पाव सरकार !"

"नही माई-बाप, मैं तो उनके आँगन में भी नहीं गया ! मैं कैसे चुराऊँगा ?"

"तो तेरे बाप ने चुराई होगी ?"

"वे तो आज से दस वर्ष पहले ही नहीं गये !"

"तो तेरी माँ ने चुराई होगी ?"

"उनका भी इंतकाल हो गया है सरकार !"

"तो लड़के ने ?"

"सरकार ! लड़का है ही नहीं !"

"तो फिर छोकी ने ?"

"वह दो-तीन वर्ष पहले भाग गई है !"

"तो अब सिद्ध हो गया कि तेरे सिवा मिरचे और कौन चुरा सकता है ? रुको, अभी निर्णय हो जायेगा कि तूने चोरी की या नही ? पेशकार !"

जी सरकार !"

"सात पीपल के पत्ते बुलवाओ और एक लाल धागे से इसकी दोनों हथेलियों पर बाँध दो। फिर लाल दहकता हुआ लोहे का गोला उन पर रखो। अगर यह बिना चीखे-चिल्लाये ७ कदम चल लेगा तो सिद्ध हो जायेगा कि इसने चोरी नहीं को और यदि जरा भी चिखा तो पता चल जायेगा कि चोरी की है।"

"सरकार ! माफ करें। मैने चोरी नहीं की भाई-बाप ! मैं भगवान की कसम खाकर कह रहा हूँ।"

'तेरा भगवान और ईमान ही तो देखना है अभी। रुको, सत्य सामने आ जायेगा। तेरा भगवान तेरी कितनी सहायता करता है, यह भी पता चल जायेगा। पेशकार ! तत्काल व्यवस्था करो।"

"महाराज ! मैं कबूल कर रहा हूँ कि चोरी की है। चमरू भय से थर-थर काँप रहा था।"

"मैं जानता था कि चोरी और कर कौन सकता है ? पेशकार ! इसकी आँखों में लाल मिर्च की बुकनी भरी जाये और इसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जाये। ले जाओ इसे मेरे सामने से और सुनो ! उस जमींदार को मेरे सामने पेश होने का हुक्म दो। जरा-जरा सी बातें मेरे सामने भेज देता है। उससे यह भी कहो कि उसके घर और गाँव में जितनी मिरचें हों वे सब यहाँ भिजवा दी जायें जिससे उनके चोरी होने की आशंका न रहे।"

"जी सरकार !" पेशकार ने कहा।

"और कोई मामला हो तो उसे भी पेश करो।"

"सरकार ! एक बूढ़ी टुनही और चूड़ी पहनने वाले मामले से सम्बन्धित तीन-चार लोग बाहर पीपल के नीचे कल शाम से बैठे हुए हैं।" पेशकार ने हाथ जोड़कर कहा।

"उस टुनही को बोरा में भरकर बूढ़े सागर में डाल दो। अगर वह शान्तिपूर्वक डूब जाये तो समझ लेना वह टुनही नही है और अगर हाथ-पैर हिलाये, चीखे-चिल्लाये तो समझ जाना वह टुनही है तब उसे बाहर निकाल कर उसके सारे दाँत तोड़ दो। अगर पूरे दाँत न हों तो उसे वह गंदा पानी पिलाया जाये जिसमें जानवर सड़ गये हों या फिर उसे कँटीली लकड़ी से तब तक पीटा जाये जब तक कि लकड़ी के पच्चीस टुकड़े न हो जायें। फिर उसे रियासत के बाहर फेंक दो। हाँ, चूड़ी वाले लोगों को तत्काल यहाँ लाया जाये।"

थोड़ी ही देर में २५-३० वर्ष के दो आदमी और २० वर्ष की एक युवती को लेकर दो सिपाही दीवान के समक्ष पहुँचे। दीवान ने कड़कती आवाज में पूछा—

"क्या नाम है रे तेरा ?"

"बीसा मालिक !"

"और तेरा ?"

"गोविन्दा सरकार !"

"और तेरी लड़की ?"

"सुमित्रा बाई।"

"क्या काम करते हो ?"

"मिल में मजदूर का काम करते सरकार !"

"दोनों ?"

"जी माई-बाप !"

"तू क्या करती है सुमित्रा ?"

"मैं भी वहीं काम करती हूँ सरकार !"

"बात क्या है ?"

"ये (बीसा की ओर संकेत करके) मुझे रोज रात में शराब पीकर पीटा करते थे। मेरी मजदूरी के भी सारे पैसे की शराब पी जाते थे और बच्चे तथा हम कई-कई दिनों तक भूखों मरते थे।'

"सो तुमने दूसरी चूड़ी पहनकर बीसा की बसी हुई गृहस्थी उजाड़ दी ?"

"नहीं सरकार ! उसने ही मुझे घर से निकाल दिया। बुरी तरह से पीटा भी और दोनों बच्चों को भी अधमरा करके घर के बाहर फेंक दिया था।"

"झूठ बोलती है। तू गोविन्दा के साथ जान-बूझकर भागी है। तुझे बीसा को हरजाना देना पड़ेगा और जुर्माना भी।"

"हम गरीब आदमी हैं सरकार ! छोटे-छोटे दो बच्चे हैं।"

"तो इसके लिए क्या हम जिम्मेदार हैं ? तूने बच्चों को उनके बाप से अलग किया, यह भी तेरा गम्भीर अपराध है। पचास रुपया जुर्माना होगा।"

"मर जायेंगे सरकार ! माफ करें।"

तेरी उम्र देखते हुए अधिक से अधिक दस रुपये माफ किये जा सकते हैं। बच्चे तेरे साथ रहेंगे, इसलिए हरजाना भी माफ करते हैं। पेशकार ! ले जाओ इसको और इसके घर से चालीस रुपये जुर्माना लेकर हमारे पास जमा कराओ।"

"जी सरकार ! पेशकार ने कहा।

"बच्चे भूखों मर जायेंगे सरकार !"

"लड़की ! तेरी भोली सूरत देखकर हमने बहुत दया की है। बीसा को दिया जाने वाला हरजाना माफ कर दिया पर जुर्माना तो तुझे लगेगा ही। पेशकार ! ले जाओ इसे मेरे सामने से वरना अब तुझे भी सजा दी जायेगी।"

"बीसा !"

"जी मालिक !"

"तुमने सुमित्रा के साथ मार-पीट की ?"

"नहीं मालिक !"

"तो तुम उसकी पूजा करते रहे ?"

"नहीं सरकार !"

"शर्म नहीं आती तुझे इस प्रकार उत्तर देते ! शराब के नशे में धुत होकर मार-पीट करता है ? तुझे एक सौ रुपये जुर्माना देना होगा ?"

"मर जाऊँगा मालिक ! बूढ़े माता-पिता हैं।"

"तो उन्हें भी ठोकता-पीटता होगा ?"

"नहीं सरकार !"

"झूठ बोलता है। मेरे पास सच बुलाने की भी दवा है। पेशकार हमारी डिब्बी उठाकर लाओ और उसमें से एक काला बिच्छू निकालकर इसके शरीर पर छोड़ दो। यह अभी सही-सही बात बता देगा। मुझे नहीं जानता, मेरे सामने भूत भी पानी भरते हैं। कितने दिन हो गये तुझे सुमित्रा को छोड़े हुए ?"

"पन्द्रह-बीस दिन ?"

"दूसरी औरत ले आया ?"

"जी साहब !"

"भगाकर लाया !"

"नहीं मालिक !"

"तो वह खुद तेरे पास दौड़कर आ गई ?"

"नहीं सरकार !"

"तो तेरा काम है दूसरी औरतों पर डोरे डालना और घर की पत्नी को मार-पीटकर भगा देना। इतना अत्याचार करेगा ? हम किस मर्ज की दवा हैं ?"

"सरकार ! माफ करें, अब आगे से नहीं होगा।"

"तुझे अपनी झोंकी छोड़ने और नयी झोंकी लाने के पचास-पचास रुपयेजुर्माना देने होंगे।"

"मर जाऊंगा सरकार ! मजदूर आदमी।"

"तेरी गरीबी देखकर दस-दस रुपये छोड़ देते हैं, पर चार बीसी से एक कौड़ी कम नही होगा। चूड़ी वाले मामले मे हम जुर्माने के साथ-साथ हड्डी-पसली भी एक कर देते हैं ताकि नयी झोंकी लाने की ताकत भी न रह जाये। हटता है मेरे सामने से या फिर मैं "

"जाता हूँ महाराज !" बीसा ने कहा।

"गोविन्दा ! तुझे क्या कहना है, तूने बीसा की पत्नी भगाई, उसकी बसी-बसाई गृहस्थी उजाड़ दी।"

"नही सरकार !" मैंने तो सुमित्रा को शरण दी है। वह और उसके बच्चे एक पेड़ के नीचे पड़े थे।

"अच्छा ! तो तूने औरतों को शरण देने के लिए अपने घर मे धर्मशाला खोल रखी है ? इसके पहले और कितनी औरतो को शरण दे चुके हो ?"

"और किसी को नही सरकार !"

"लगता है, तू भी सही बात नही बतायेगा, पेशकार ! उस बिच्छू का प्रयोग इसके शरीर पर करो। बिचारा गोविन्दा कितना सीधा है ? जवान लड़कियों को अपने घर में शरण देता है। शराब के नशे में खो गया था क्या ?"

"नही साहब ! मैं नही पीता ?"

"तो फिर मिल के पास शराब की दुकानें क्या देखने के लिए खोली गई हैं ? शराब नहीं पियोगे तो काम क्या खाक करोगे ? लगता है, तुम कामचोर भी हो ?"

"मैं अपना काम ईमानदारी से करता हूँ सरकार !"

"तेरी ईमानदारी का पता अभी चल जायेगा। पेशकार ! मेरा हुक्का गर्म करो। ये चोर-चंडाल हमें आराम से जीने नहीं देते। सुन गोविन्दा !

पच्चीस-पच्चीस रुपये दोनो बच्चों को अपने पास रखने का जुर्माना, पचास रुपये सुमित्रा को अपने घर में रखने का। कुल एक सौ रुपये। बोल मंजूर है या नहीं ?"

"मंजूर है सरकार !"

"पेशकार ! सुना, इसे जुर्माना मंजूर है। यह गरीब नहीं अमीर आदमी है। जुर्माने के साथ-साथ इसे दस जूते भी लगाये जाएँ जिससे हेकड़ी भूल जाये ! ले जाओ, इन नालायकों को मेरे सामने से।"

तभी एक सिपाही ने आकर दीवान साहब से निवेदन किया था कि महारानी साहिबा ने उन्हें स्मरण किया है अतः वे कचहरी छोड़कर तत्काल उठ गये।

•

तीन

•

"पुजारी जी ! ओ पुजारी जी ! उठो न ! चार बजे सबेरे के मिल का भोंपू बज चुका है।" भजना ने पुजारी को जगाते हुए कहा।

"अरे भाई थोड़ा और सो लेने दो, आज नींद ही नहीं लग पाई भजन ! जानते तो हो, सिद्धेश्वरी और विन्ध्येश्वरी के भजनों में रात को दो से अधिक बज गये थे।"

"क्या गजब का स्वर पाया है महालता ने ?" पुजारी ने कहा।

"केवल स्वर पुजारी जी ?" भजना ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे भजना क्यों मजाक करता है। जो चीज देखने लायक होती है वही सुनी भी जाती है।" क्या भजन था—

जुलुम करत पिय तेरी नजरिया।
जब से परी सजन मेरे तन
जाग रही हिय मदन बदरिया॥

दिन नहिं चैन, रैन नहिं नींद
बिकल करति पग धरत सेजरिया ।
गोबर्धन घायल बहु घूमत
चतुर नवल संग गोप गुजरिया ॥

'अरे ! यह तो दाऊ गोबर्धनदास जी का भजन है । एक बार मैंने उन्हीं के मुख से सुना था ।" भजना ने कहा ।

"हाँ, उन्हीं का है । पर महालता ने जिस मस्ती से उसे गाया, वह कुछ दूसरी ही बात थी ।

'पुजारी जी ! क्या आज किसी का दिन, तेरहवी, श्राद्ध आदि नहीं है ? जो इस तरह आराम से सो रहे हो ?"

"दिन, तेरहवीं, श्राद्ध नहीं रे, जन्मोत्सव, पुण्य स्मरण, व्रत, त्योहार, बोल ! तुझे इतने दिन साथ में रहते हुए हो गया, ठीक से पर्वों का नाम भी नहीं जानता ?"

"एक दो हों महाराज तो याद भी रख लूं । यहाँ तो हर माह में १०-१५ दिन बड़ा पूजन होता ही है । आप साल में १५० से अधिक पर्व-त्योहार मानते हैं ।"

'हम नहीं रे भजना ! परम धार्मिक राजमाता की कृपा और आज्ञा से ही ऐसा होता है ।"

"यह भी जानता हूँ महाराज, अच्छी तरह जानता हूँ—जाकर महारानी से निवेदन किया—माँ ! आज भाग्यवान की कृपा से मांगल भट्ट, पद्म नाभ जी, राम भट्ट, व्यासाचार्य जू, वामन भट्ट जी, स्वरूपाचार्य जी, माधवाचार्य जी, गोपीनाथ जी, बलभद्र भट्टाचार्य, परशुराम देवाचार्य, गोपालाचार्य, धन्वा बाई, भूरी भट्टाचार्य श्यामाचार्य, हरि व्यास देवाचार्य या ऐसे ही किसी महापुरुष की जयंती है और बस बन गया काम—एक जोड़ा धोती, सवा सेर मिठाई. ५१ कपूरी पान, ११ सेर पंचामृत, एक दर्जन मधुफल, दक्षिणा, तुलसी, आरती सब पक्की हो गई ।" भजना ने आगे कहा—"पंडित जी ! ये रोज-रोज पूजा

के गमछा, धोती-जोड़ा ले जाते हो, उनका करते क्या हो ? साल में दो सौ से अधिक धोती-जोड़ा और लुगरा ले जाते हो।''

''तो क्या तुझे भी मालपुआ नहीं मिलता रे ! नजर लगाता है। सब भगवान और रानी माता का दिया हुआ खाते हैं। अपने-अपने भाग्य !''

''हाँ, पंडित जी ! मेरे इतने भाग्य कहाँ ! मैं तो रोज-रोज सुपारी, हल्दी, जवा, तिली, गुलाल, चंदन, केसर, कस्तूरी, अष्टांग धूप, अगरबत्ती, कपूर आदि की पुड़ियाँ ही खोलते-खोलते थक जाता हूँ। सारा तर माल और पंचमेवा··· माल छककर सोये थे, नींद खुले भी तो कैसे ?''

''लगता है रात में खबासिन ने घर के दरवाजे नहीं खोले, इसलिए सबेरे-सबेरे तूने पूजा-पुराण छेड़ दिया। थोड़ा और सो लेने दो, फिर जगा देना।'' पुजारी ने कहा।

''रानी साहिबा उठ चुकी हैं। उनके स्नान करने की आवाजें आ रही हैं।''

''अरे भाई तब तो अनर्थ हो जायेगा। ऐसा तूने पहले क्यों नहीं बताया ?'' कहते हुए पुजारी तत्काल बिस्तर छोड़कर उठ बैठे और गमछा आदि लेकर किले के पिछले दरवाजे से रानी सागर में नित्य क्रियाएँ सम्पन्न करने के लिए चल पड़े।

यह तो उन्हें रास्ते में ही याद आया कि कल चौदस थी, इसलिए आज निश्चित रूप से पूर्णिमा होगी। अतः रोज की पूजा के साथ-साथ आज सत्यनारायण की पूजा भी होनी है। हर पूर्णिमा को गुरु व्यास पूजा भी होती है। यह तो अच्छा हुआ कि आज चन्द्रग्रहण नहीं है वरना उसकी भी तैयारी करनी पड़ती है। पुजारी ने सोचा तभी वे साथ चल रहे भजन से कहने लगे—''भजन ! तुझे याद है न कि आज पूर्णिमा है—सत्यनारायण की कथा। भण्डारघर में जाकर जल्दी से तोल देना—५ सेर गेहूँ का आटा, ५ सेर शक्कर, ५ सेर घी, ११ सेर पंचमेवा और १०१

तुलसी दलों का प्रसाद तैयार कर दें। वहीं से पूला, हवन आदि की सामग्री के साथ दो धोतियाँ भी ले आना।"

"और कुछ लाना है पुजारी जी ?"

"वही केले के चार खंभे, एक दर्जन नागपुरी केले, एक दर्जन संतरे, ग्यारह नारियल और तो तू खुद जानता है। रोज रोज बताना पड़ेगा क्या ?"

"दक्षिणा, भूरसी, आरती आदि के लिए कितना पैसा लगेगा महाराज !"

"वही पुराना भाव—सवा रुपया दक्षिणा के, एक रुपया आरती का, दो आने भूरसी के—मँहगाई इतनी अधिक बढ़ गई पर इन सब चीजों में वृद्धि नहीं हुई। भजना, आज पूर्णिमा है न। अतः नवग्रह, मार्कण्डेय, ठाकुर जी. सप्तर्षि, कुण्डली, गणेश, कलश, अग्नि, यज्ञ, पोथी एवं पृथ्वी पूजन भी होगा। इनमें से सबके लिए एक-एक रुपया और जोड़ लेना।"

"पुजारी जी ! क्या इनमें से किसी देवी-देवता की न्यौछावर नहीं होती ? क्या उसके बिना पूजा का पूरा-पूरा फल मिल सकता है ? अब हर बार आपको कहाँ तक याद दिलाता रहूँ ?"

"तुझे न्यौछावर जरूर मिलेगी भजन ! जरूर मिलनी चाहिए। पूजा की सामग्री में उसे भी जुड़वा देना।" पुजारी ने कहा।

दिसम्बर की कड़कड़ाती ठंड। पुजारी तथा भजना ने ले-देकर स्नान किया। पंडित जी के मुँह से श्लोकों की बौछारें आ रही थीं, पर उनके दाँत कड़कड़ाने की ध्वनियाँ उससे भी तेज थीं। लौटते समय रास्ते में उन्होंने भजन से कहा—"मैं जब तक भगवान को स्नान कराता हूँ तब तक तुम पूजा की सारी सामग्री इकट्ठी करो और देखो, जरा जल्दी करना, आज पूजा में कुछ देर हो ही जायेगी। नौ तो पक्का बज जायेगा। पूजा के कारण रानी साहिबा के जाने के समय में फर्क न पड़े।"

मंदिर में पहुँचते ही पुजारी जी ने जनेऊ में बँधी चाबी निकालकर कृष्ण, बलराम, राधा तथा रेवती के मंदिर के पट खोले। सहसा चलते हुए

घी के दिये के प्रकाश में सोने के आभूषण झिलमिला उठे। चांदी के विशाल सिंहासन में प्रतिष्ठित थीं मूर्तियाँ। सोने के मुकुट, सोने की झूमर, चांदी का चँवर, चांदी के पात्र—पुजारी का मन गौरवान्वित हो उठा। मंत्रोच्चारण करते हुए वे भगवान के स्नान-कार्य में लीन हो गये। तभी पांच बजे का भोंपू बजा था और ठीक उसी समय अपनी विश्वस्त दासी के साथ रानी साहिबा ने मंदिर में प्रवेश किया—रेशमी श्वेत वस्त्र, मुख पर वैसी ही शान्ति और ममता की गहरी छाया, हाथों में पुष्पांजलि—वे सीधे मंदिर में पहुँचीं। राधा-कृष्ण के चरणों में अपनी पुष्पांजलि अर्पित कर वे आँखें बंद कर ध्यान-मग्न हो गईं। उनके अधरों पर स्पष्ट रूप से श्लोक की ध्वनियाँ गूंज रहीं थीं। धीरे-धीरे वे भी पूर्णतः शान्त हो गईं। एक परम गहन तल्लीनता। इस अवधि में पुजारी ठीक मंदिर के द्वार के सामने खड़े रहते—कोई भीतर न आये अथवा मंदिर की प्रोल में शोर-गुल न करे। रानी साहिबा के ध्यान भंग हो जाने का भय जो रहता था।

लगभग आधे घन्टे की ध्यान-साधना के बाद राजमाता बाहर आईं और उनके आते ही पूजा का कार्य प्रारम्भ हो गया। यह उनका नित्य का कार्य था। उनके मुँह में गंगाजल तभी जाता था जब वे इस तरह अपनी नित्य आराधना पूरी कर लेती थीं। सम्पूर्ण विधि-विधान से पूजा प्रारम्भ करते हुए पुजारी ने पूर्णिमा के अवसर पर सत्यनारायण व्रत कथा का पारायण प्रारम्भ किया। सैकड़ों बार सुनी हुई इस कथा को महारानी पुनः सुनने में पूर्ण तन्मय थीं। लगभग नौ बजे पूजा की समाप्ति के बाद वे राधाकृष्ण को नमस्कार कर राजभवन में चली गईं।

पूजा के बाद भगवान का जलपान होना था। जलपान के लिए दो थालियों में पाँच ताजे पकवान और पंचमेवा सजाये जाते थे। एक थाल भगवान के लिए और दूसरा महारानी के लिए। भगवान की सामग्री पुजारी ले लेते थे और महारानी अपनी थाली से थोड़ा-सा प्रसाद लेकर सारा प्रसाद दासियों तथा अन्य कर्मचारियों में वितरित कर देती थीं।

किसी को प्रसाद कम न पड़े और पेट भर जावे अतः भण्डारगृह से प्रसाद थाली भरकर ही भेजा जाता था। सब कुछ राधा-कृष्ण का है, कमी किस बात की।

इसके थोड़ी देर बाद ही भण्डारगृह से सूचना आ जाती थी कि महारानी का भोजन तैयार हो गया है। राजमाता कभी-कभी मुखिया की लड़की यशोदा से कहती—जा खाना खाकर आ। खाना खाने के बाद डाक्टर पूछता—"कौन-कौन-सी चीज बनी हैं आज ? उनका स्वाद कैसा है ? मिचली तो नही आ रही ? सुस्ती तो नहीं लग रही ? पेट में किसी प्रकार का दर्द तो नही ?" जब सब कुछ ठीक होता तो आदेश मिलता—"अब महारानी भोजन करने आ रहीं हैं।" जैसे ही महारानी अपने महल से निकलतीं, रसोईघर में खौलते हुए पानी में थोड़े से बासुमति चावल पकने के लिए छोड़ दिये जाते। जब तक सोने की थाली में दूसरी सामग्रियां परोसी जाती तब तक वे पक जाते।

रसोईघर में ही एक ऊंचा सा आसन बना हुआ है। वहां विशेष पीढ़ा लगाया जाता। महारानी के वहां बैठते ही दो थालियां सजकर आ जातीं। इस समय रसोइयों का काम विशेष रूप से बढ़ जाता था। यह ध्यान रखा जाता था कि रसोईघर के आसपास और कुछ दूर तक कोई शोर-गुल न हो। वैसे रसोईघर मे पुजारी तथा रसोइयों को छोड़कर अन्य किसी बाहरी व्यक्ति को किसी भी शर्त पर प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिलती। भोजन प्रारम्भ होने के पहले पुजारी दरवाजे के पास नीचे को मुंह किये खड़ा रहता। दो थालियों में से चांदी वाली थाली वह उठाता और राधाकृष्ण के मंदिर में ले जाता। भगवान को भोग लगाता और जोर से श्लोक पढ़ता—

> यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
> भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

(अर्थात् यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने शरीर-पोषण के लिए ही

पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं) मंदिर से आती हुई इस आवाज को सुनकर महारानी साहिबा भोजन प्रारम्भ करती थीं। भोजन के सम्बन्ध में रसोइयों को यह स्पष्ट निर्देश था कि प्रतिदिन पाँच प्रकार की सब्जियाँ बननी ही चाहिए और एक बार बन जाने के बाद अगले तीन दिनों तक वे दुहराई न जायें। इस मामले में भण्डारगृह की व्यवस्था रखने वाले पं० तिवारीजी विशेष ध्यान रखते थे। एक दिन चार प्रकार की सब्जियाँ ही बनी थीं तो महारानी ने तिवारी को बुलाकर पूछ लिया था—"क्यों तिवारी जी! क्या आजकल राज्य में सब्जियाँ कम होने लगी हैं? या करुणानिधान कृष्ण कन्हैया करेले पसन्द करने लगे हैं?"

"क्षमा कर दो माँ! अब यह गलती भविष्य में नहीं होगी।" तिवारी जी ने थर-थर काँपते हुए कहा था।

भोजन के बाद ही राजमाता अपने भेंट कक्ष में पहुँचती थीं। भेंट कक्ष के लिए दूसरी मंजिल पर एक बड़ा-सा कमरा था जिसमें रेशमी गद्दे-तकिया लगे हुए थे। बीचो-बीच एक कलात्मक फानूस भी लटक रहा था। जरी के महीन परदे खिड़की-दरवाजों पर हिलते रहते थे। विशिष्ट अतिथि और सामान्य दर्शक भी वहीं बैठकर प्रतीक्षा करते थे। रानी साहिबा एक सुनहरे रंग के परदे की ओट में बैठतीं और वहीं से आदेश-निर्देश दिया करती थीं, लोगों की प्रार्थना आदि भी सुना करतीं थीं, भेंटें स्वीकारतीं थीं।

यहीं बैठे-बैठे आज दीवान साहब घबरा रहे थे। वे सोच रहे थे कि आज रानी साहिबा ने कैसे स्मरण किया? मैं तो रोज ही यहाँ आया करता हूँ, आज भी आता। पर बुलाया है—यह संदेश, निश्चित रूप से कुछ आशंकाओं को जन्म देता है। लगता है, इस बार फिर भण्डारगृह में कोई गड़बड़ी हो गई है। इस तिवारी को अब हटाना ही पड़ेगा यहाँ से। तभी रानी साहिबा ने भेंट कक्ष में आकर परदे की ओट से ही पूछा था—"दीवान साहब! क्या सचमुच देर हो गई बैठे हुए?"

"नहीं महारानी! अभी ही तो आया हूँ। कुशल तो है? पूजा-पाठ

विधि-विधानपूर्वक चल रहा है न ? व्यवस्था में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई ? आपकी एक माह की विशेष पूजा के लिए हमने निर्देश दे दिए हैं। आपकी कृपा और दया से प्रजा सुखी और सन्तुष्ट है। पिछले एक माह से भिखारियों के लिए लंगर चल रहा है। सभी लोग आपकी व्यवस्था और उदारता से प्रसन्न हैं। राजमहल के बाहर वट पीपल के नीचे ब्राह्मण-भोज की नियमित व्यवस्था हो रही है।"

"सुना है, स्कूल के कुछ लड़कों ने आन्दोलन किया, जुलूस निकाला, भाषण दिये ?"

'अरे यह तो बहुत छोटी-सी बात है रानी साहिबा ! वह एक लड़का प्यारेलाल ठाकुर है न ? उसी की बदमाशी है। उसी ने लड़कों को भड़का दिया था। पर सब ठीक कर लिया गया है, कहीं कोई गड़-बड़ी नहीं !"

"ठीक तो होना चाहिए दीवान साहब ! सुना है लड़कों की फीस वगैरह बढ़ा दी गई है ?"

'महारानी ! स्कूलों में आजकल दूर-दूर की रियासतों के आलतू-फालतू लड़कों की भीड़ बढ़ रही है वैसे हम मना नहीं कर सकते, इस-लिए सोचा कि इसी प्रकार भीड़ को नियंत्रित करें। साँप मर जाये पर लाठी न टूटे। वैसे गाँव के लोगों को शिक्षित करना— नाग को दूध पिलाना होगा महारानी ! अगर सारी जनता शिक्षित हो गई तो शासन करना मुश्किल हो जायेगा। भला हो अंग्रेजों का, उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा को ऐसा रूप दिया है कि उसमें ढलकर यहाँ के लोग एक अच्छे क्लर्क ही हो सकते हैं। पर सब के सब क्लर्क ही बन गये तो खेतों पर काम कौन करेगा ?"

"दीवान साहब ! स्कूल का उपयोग राजनीतिक स्वार्थ के लिए न किया जाये। अपने बच्चों को पढ़ने-लिखने की सारी सुविधाएँ मिलनी ही चाहिए। हाँ, अगर पैसे-धेले की कमी हो तो वैसी बात करो !"

"जैसी आज्ञा रानी साहिबा ! वैसे छात्रों का बढ़ा हुआ शुल्क माफ कर दिया गया है।"

"ठीक किया ! कल हमने राज-पुरोहित से बात की थी। उन्होंने बताया कि कुँआर के महीने में शतचण्डी या विष्णु या रुद्र यज्ञ कराया जाये जिससे इन्द्रादिक देवता प्रसन्न रहते हैं, सुन्दर वृष्टि होती है, महामारी उपद्रव आदि शान्त हो जाते हैं। राजा प्रजा मे किसी प्रकार का अन्तर नहीं रहता। इस प्रकार से वर्ष कल्याणमय होता है।"

"जैसी आपकी आज्ञा महारानी ! कल से ही उसकी तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी जायेंगी और रियासत की सारी जनता से निवेदन किया जायेगा कि इस पुण्य कार्य में अधिक से अधिक संख्या में एकत्र होकर भाग ले। यह यज्ञ सारे राज्य की मंगल कामना के लिए है। बनारस से पंडे बुलवाये जायें या मथुरा से ? आप जितने पंडितों को बुलाने का आदेश दें, उतने बुला लिए जायें।"

"इतनी जल्दी नही है दीवान साहब ! अभी तो मैंने अपने अनुष्ठानी पंडित से कह दिया है कि वह आज से ही रियासत के सभी लोगों के कल्याण के लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का जप प्रारम्भ कर दें। राज-ज्योतिषी नें यह बताया है कि आजकल दीवान साहब की ग्रह-दशा ठीक नही चल रही है। शनि की वक्रदृष्टि है। अतः आप भी आज शनि का दान प्रारम्भ कर दें। सामग्री भण्डार-घर से ले लें—१ नीलम, १। सेर काला तिल, काला उड़द ५ काठा, तेल १। सेर, काला कपड़ा ५ गज, कुलथी १। सेर, लोहा १। सेर, एक काली भैंस, एक काली गाय, १०० काले फूल, १ जोड़ी जूते, कस्तूरी १। माशा, सोना १६ माशा। इन सारी वस्तुओं का दान बड़े सबेरे एक माह तक होना चाहिए। मैं राधाकृष्ण के मंदिर में शनि चालीसा का पाठ करने का आदेश दे दूँगी।"

"जब तक आपकी कृपा है रानी साहिबा, तब तक मुझे कोई ग्रह नहीं लग सकता। फिर भी आपने जो आदेश दिया है, उसे पूरा कर दूँगा। नगर के कुछ सेठ साहूकार आपके दर्शन हेतु भेंट लेकर आये हैं, इन्हें क्या आज्ञा है ?"

"भेंट स्वीकार की जाये !"

इसी समय दरवान ने आकर प्रार्थना की थी कि दो लड़के किले के प्रथम गेट पर सबेरे से खड़े हैं।

"क्या काम है उन्हें ?"

"महारानी साहिबा के दर्शन करने की बात कह रहे हैं !"

"ले आओ !" रानी साहिबा ने उत्तर दिया।

थोड़ी ही देर में दो लड़के फटे-चिथे कपड़े पहने उपस्थित हुए। उन्होंने दूर से ही जमीन में गिरकर महारानी के चरणस्पर्श किये। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

"कहाँ से आये ?' रानी साहिबा ने पूछा।

' फूलपुर से !"

' पिता जी क्या करते हैं ?"

' गोंटिया के यहाँ हल चलाया करते थे।"

"तो क्या अब नहीं हैं ?"

"पता नही ?"

"क्यों ?"

"हमारा धान का खेत था। एक दिन गोंटिया के आदमियों ने आकर उसे काट लिया।"

"क्यों ?"

"आदमी कह रहे थे कि दीवान साहब को नजराना भिजवाना है !"

"फिर ?"

"हमारे पिताजी ने उनसे केवल यह निवेदन किया कि थोड़ी-सी धान बच्चों को छोड़ दो, इस पर उन आदमियों ने उन्हें बहुत पीटा। फिर सिपाही पकड़ कर उन्हें गोंटिया के घर ले गये। बाद में हम लोगों को इतना ही पता चला कि गोंटिया ने उन्हें दीवान साहब के पास भिजवा दिया है।"

"माँ ने इधर-उधर दौड़-धूप की। पर गाँव वालों ने कुछ नह

किया। केवल करमू चाचा ने कहा कि जाकर रानी साहिबा के दर्शन करो अब हल्कू कभी लौट नहीं सकता। उसी दिन शाम को एक सिपाही आया और माँ से कहने लगा कि चलो सिपाही गुढ़ी साफ करनी है और दीवान साहब ने तुझे बुलाया भी है।

"आगे क्या हुआ ?"

"रानी साहिबा ! ये बदमाश छोकरे हैं। लगता है उसी प्यारेलाल ने इन्हें आपके पास भिजवा दिया है।" दीवान ने कहा।

"इनकी बात पूरी तो सुन लो दीवान साहब !" रानी साहिबा ने कहा। फिर उन्होंने बच्चों से पूछा—"आगे क्या हुआ ?"

'सबेरे मेरी माँ सिपाही गुढ़ी के पास बेहोश हालत में मिली। कुछ गाँव वाले उन्हें उठाकर घर ले आये थे पर होश नहीं आया और दूसरे दिन वे हमें छोडकर चल बसी !'

"यह तो बहुत बुरा हुआ ? तुम लोग यहाँ कैसे आये ?" रानी साहिबा ने पूछा।

करमू चाचा ने ही बताया कि तुम लोगों से राजा बहुत नाराज हैं। अतः रातों-रात गाँव छोड़कर शहर भाग जाओ वरना तुम दोनों का भी वही हाल होगा जो तुम्हारे माता-पिता का हुआ है। हम लोग रातों-रात वहाँ से भागे और भीख माँगकर खाने लगे। १५-२० दिन हो गये घर छोड़े हुए। शहर में एक लंगर चल रहा है, वहाँ भी एक-दो बार गये थे।"

"क्या हुआ वहाँ ?"

"हम दोनों को वहाँ से मार-पीट कर भगा दिया—न अंधे, न लूले, न लँगड़े - नहीं मिल सकता भात, पसिया भी नहीं। भागो यहाँ से। अगर दीवान साहब ने देख लिया तो तो दोनों हाथ-पैर तोड़ दिये जायेंगे "

"फिर क्या हुआ ?"

वहीं एक ठाकुर साहब से भेंट हो गई थी हमारी। उन्होंने कहा था—सबेरे रानी साहिबा के महल में जाकर उनसे कोई नौकरी माँग

लो, इस प्रकार कब तक भीख माँगते रहोगे ? सो रानी माँ ! हमें कोई नौकरी दे दो, हम कुछ भी कर लेंगे, कहीं भी रह लेंगे।''

"सुखिया ! तुम इन दोनों बच्चों को भण्डार घर से भोजन करा दो एक माह तक इन्हें खाना भण्डार घर से दिया जाये और दीवान साहब, आज ही इन्हें मिल में नौकरी पर रख लिया जाये।'

"जैसी आज्ञा रानी साहिबा ! पर देखो उस प्यारे लाल ने ही एक नयी कहानी गढ़कर इन्हें आपके पास भिजवा दिया है। ये बदमाश हैं।" दीवान ने कहा।

"कहानी और सत्य में फर्क होता है दीवान साहब ! मैं वास्तविकता का पता लगा लूंगी। ठीक है, अब काफी देर हो रही है।" कहते हुए वे भेंट कक्ष से उठकर अपने शयन-कक्ष में चली गईं।

•

चार

•

दीवान साहब सन्ध्या के समय मिल के मैनेजर के पास पहुँच थे। मैनेजर ने उनका स्वागत करते हुए कहा—"कैसे कष्ट किया दीवान साहब, मुझे भी तो कुछ करने का अवसर दिया होता ?"

"इस समय मैं एक बहुत जरूरी काम से तुम्हारे पास आया हूँ। तुम प्यारे को जरूर जानते होगे। अरे वही छोकर, स्कूल में पढ़ने वाला ?"

"क्या वही जो कल लड़कों के जलूस के आगे-आगे चल रहा था।"

"हाँ-हाँ वही।"

"क्या हुआ उसे ? सुनते हैं वह तो बहुत अच्छा लड़का है। भाषण भी अच्छा देता है। अभी से जनता के हृदय में उसके प्रति प्रेम है।"

"वही लड़का सारी समस्याओं की जड़ है।"

"तो उसे उखाड़कर फेंक दो। न कोई कांटों को सींचता है और न सांप को दूध पिलाता है। पर यह ध्यान में रखिए कि उसकी बातें सुनने के लिए नगर की सारी जनता टूट पड़ती है। जनमत उसके साथ है।"

राजतंत्र में जनमत नहीं दीवान-मत चलता है!"

"सो तो है ही। अगर कहो तो अभी दो मजदूर भेजकर उसकी धुलाई और रंगाई कर दें।"

"सोच तो मैं भी यही रहा था पर कहीं गड़बड़ी उत्पन्न हो गई तो?"

"आप जो कुछ सोचते हैं, ठीक ही सोचते हैं। कहीं मिल के मजदूर भी उसके साथ हो गये या हड़ताल हो गई तो हम मुफ्त में मारे जावेंगे।"

"फिर क्या किया जाये?" दीवान साहब ने पूछा।

"आप दीवान हैं, अनुभवी हैं ऐसे कितने ही मूर्खों को ठिकाने लगा चुके हैं।" मैनेजर ने कहा।

"जार्ज! महारानी ने आज दो लड़के तुम्हारे पास भिजवाये हैं। एक बारह-चौदह वर्ष का होगा और दूसरा लगभग आठ-दस वर्ष का। उनका आदेश है कि इन्हें आज से ही मिल की नौकरी में रखना है।"

"रानी का आदेश सिर माथे पर। दो क्या उनके कहने पर तो मैं दो सौ मजदूरों को काम पर रख लूं। लड़के क्या बुड्ढे भी रख लूं।"

"जार्ज! तेरी बुद्धि अक्सर घास चरने चली जाती है। इन छोकरों को काम पर नहीं रखना है। ये पूरे काल हैं, यमदूत। समझे न?"

"कौन आपके?"

"मेरे नहीं, तुम्हारे जार्ज! रानी साहिबा के सामने इन्होंने मेरी फजीहत की। अब मजदूरों के सामने तुम्हारी करेंगे।"

"तो इनकी भी धुलाई-रंगाई करा दूं?"

"तुम अपने मुंह से कह सकते हो, कर कुछ नहीं सकते।"

"रानी साहिबा के आदमी हैं, सोच लीजिए। इनके स्थान पर हमारी बुलाई न हो जाये। महारानी राई-रत्ती का समाचार रखती हैं।"

"मेरे रहते हुए तुम डरते हो, धिक्कार है तुम्हें। डरपोक कहीं के।"

"दीवान साहब से कौन नहीं डरता ?"

"यही तो मैं भी कहता हूँ जार्ज ! सबको डरना चाहिए। पर वह प्यारेलाल मुझे डरा रहा है। आ गया कलियुग। ठीक ही कहा था रानी माता ने—आजकल मुझ पर शनि की कुदृष्टि है।"

"यह शनि कौन है दीवान साहब ?"

"वही प्यारे लाल !

"सुना है तुम लोगों के शनि दान-दक्षिणा लेकर प्रसन्न हो जाते हैं। फेंक दो न हड्डी के टुकड़े उसकी ओर।"

"यह ठीक कहा तुमने जार्ज ! कभी-कभी तुम्हारा दिमाग भी काम करता है !"

"मेरा क्या है दीवान साहब ! आपही के चरण-चिह्नों पर चलता हूँ, आपकी तरह ही सोचता हूँ, आपकी तरह ही पीता हूँ...."

ठहाका लगाते हुए दीवान साहब ने कहा—"यह बात सही तुमने अक्क की। तभी तो मैं सोच रहा था कि इतनी देर हो गई और काम की कोई बात नही हुई। निकालो जल्दी से माल, अभी सारी समस्यायें हल हो जाएँगी। जार्ज, उन छोकरों से जमकर काम लो -१४ घंटे रगड़कर, दो दिन में अपने आप भाग जाएँगे। लोग कहते हैं कि मिल के मजदूर कपड़ा बुनते हैं। कपड़ा नहीं जार्ज कफन कहो, कफन !" दीवान साहब ने पेग चढ़ाते हुए कहा। थोड़ी देर बाद दूसरा पेग चढ़ाते हुए उन्होंने कहा—"जार्ज ! तुम प्यारेलाल को भी बुलाकर यहीं नौकरी दे दो, वह अपना कफन बुन डाले, कभी-न-कभी जरूरत तो पड़ेगी ही !"

"जी दीवान साहब !'

"यह कितनी अच्छी चीज है। लोग व्यर्थ ही मुझे और इसे बदनाम करते हैं।

"दीवान साहब ! कोई हिमालय से भी बड़ा और उससे अधिक शीतल और निर्मल भले ही बन जाये पर बदनाम करने वाले उसे बदनाम करते रहेंगे। यों ही अंगुलियां उठाने वाले लोगों की कमी इस संसार में नही हैं।"

"पर मेरा यह उसूल है कि अंगुलियां उठाने वाले के दोनों हाथ ही गायब कर दो, जिससे फिर अंगुलियां उठाने का प्रश्न ही खत्म हो जाये।"

"इसी की बदौलत तो आपका प्रशासन इतना चुस्त और दुरुस्त है दीवान साहब !" जार्ज ने कहा।

"और तुम्हारी मिल ?"

"वह तो आपकी कृपा का परिणाम है !"

"तुम एक काम कर सकते हो जार्ज !"

"हुक्म कीजिए।"

"सुमित्राबाई को बुला सकते हो ?"

"कोई विशेष काम है क्या ?" हँसते हुए जार्ज ने पूछा।

"हाँ आज मैंने उस पर कुछ जुर्माना किया था। अब सोचता हूँ कि उसे पूरा माफ ही कर दूँ। यार, तुम्हारी मिल क्या है, सुन्दरता का अजायबघर है।"

"पर है कौन यह सुमित्रा ? दीवान साहब !"

"तुझे इतना भी पता नहीं और मिल की मैनेजरी करता है। एक अच्छे मैनेजर को सारे मजदूरों का भूगोल और इतिहास याद होना चाहिए। तुम निकम्मे हो।" इस समय तक वे काफी पी चुके थे और उनकी जबान लड़खड़ाने लगी थी।

"दीवान साहब !" जार्ज ने कहा।

"दीवान साहब के बच्चे, जानते हो तुम किससे बातें कर रहे हो ?

मैं खुद उसे देखने जाऊँगा।" वे उठे, दो-चार दस कदम चले और फिर लड़खड़ाकर गिर पड़े। आर्ज ने दो-चार मजदूरों की सहायता से उन्हें उठवाकर उनकी बाहर खड़ी बग्गी में लिटा दिया और बग्गी दीवान साहब के बंगले की ओर रवाना हो गई।

•

पाँच

•

दूसरे दिन सबेरे ही दीवान साहब ने एक सिपाही भेजकर प्यारेलाल को अपने बंगले में बुलाया और बड़ी ही मीठी आवाज में उनसे कहा—

"बेटे! जरा सी बात के लिए आन्दोलन की क्या जरूरत थी। तुम कह देते तो हम तुम्हारी फीस यों ही माफ कर देते?"

"प्रश्न गरीब छात्रों का था चाचा जी!"

"तुम जिस गरीब छात्र के लिए कहते, हम उसकी फीस माफ कर देते।"

"प्रश्न सिद्धान्त का है चाचा जी! यह तो सरासर शोषण भी है।"

"बेटे राजतंत्र में न कोई सिद्धान्त होता है और न शोषण।"

"यही मनोवृत्ति हमारे देश की गुलामी का सबसे बड़ा कारण है।"

"बेटे! गुलाम मूर्ख लोग बनते हैं। मुझसे कौन कह सकता है कि मैं गुलाम हूँ?"

"वास्तविक शासक तो अंग्रेज हैं, अतः गुलाम आप भी हैं और हम भी!"

"अंग्रेज तो हमें कभी गुलाम नहीं कहते?"

"यह उनकी बुद्धिमत्ता है। वे गुलामों को गुलामों द्वारा अनुशासित करना जानते हैं।"

"खैर, छोड़ो इस बात को। मैं सोच रहा हूँ, इधर मिल में मजदूरों का अनुशासन बिगड़ता जा रहा है। अगर तुम वहाँ क्लर्क के पद पर काम करने लगो तो मिल का कायाकल्प हो जाये।"

"अर्थात् अब आप मुझे भी अपने शोषण का हथियार बनाना चाहते हैं?"

"पता नहीं, आजकल तुम कौन-सा साहित्य पढ़ रहे हो। तुम्हारे दिमाग में शोषण, गुलामी, आन्दोलन जैसे दूषित विचारों को छोड़ अच्छे विचार उत्पन्न ही नहीं होते।"

"चाचा जी! क्या वास्तविकता को अनदेखा कर कोई सुखी रह रह सकता है?"

"यही तो मैं कह रहा हूँ प्यारेलाल! तुम जैसे लगनशील और ईमानदार व्यक्ति की सेवाएँ इस स्टेट को जरूरी हैं। योग्य व्यक्तियों से ही शासन-व्यवस्था सुधरती है।"

"जहाँ सब कुछ भ्रष्टाचार में डूबा हो, वहाँ सुधार तब होता है जब पूरी व्यवस्था ही बदल दी जाये। जगह-जगह थिगरे लगा देने से न देश स्वतन्त्र हो सकता है और न क्रान्ति हो सकती है।"

"देश की स्वतन्त्रता और क्रांति की बातें तो दिवा सपने हैं। उन्हें छोड़ो। पर यह सच है कि तुम्हारी इच्छाओं के अनुसार ही हम काम कर रहे हैं। तुमने कहा फीस कम करो, फीस कम कर दी। तुमने कहा – यूनीफार्म की जरूरत नहीं, यूनीफार्म से बन्धन उठा दिया गया, और क्या चाहते हो।"

"मैं चाहता हूँ कि गरीब जनता का शोषण करने वाले आततायियों का नाश हो?"

"ये किसकी बात कर रहे हो प्यारेलाल?"

"उसकी, जिसने एक गरीब किसान को अपने रास्ते से इसलिए

साफ कर दिया, क्योंकि उसने निवेदन किया था कि उसके खेत के धान का कुछ हिस्सा उसके बच्चों के लिए छोड़ दिया जाये। उसकी पत्नी को इसलिए समाप्त कर दिया, क्योंकि उसने रानी साहिबा तक पहुँचने का विचार किया था ?"

"ये कहाँ की बातें कर रहे हो प्यारेलाल !" दीवान ने साश्चर्य पूछा।

"फूलपुर गाँव के उन दोनों बच्चों के माता पिता की, जो रियासत की क्रूरताओं का शिकार हो चुके हैं ?"

"अच्छा, वे बच्चे ! हमने उन्हें मिल में काम पर लगा दिया है। उस जमींदार को भी बुलवाया है जिसने मेरे सम्बन्ध में जनता को भड़का दिया है। उन बच्चों के साथ न्याय होगा और दोषी को दण्ड दिया जायेगा। महारानी ने भी यह आश्वासन दिया है, फिर भी तुम उन्हीं का विरोध कर रहे हो ?"

"समय आने पर विरोध सब का किया जायेगा ?"

"रियासत एक सुदृढ़ चट्टान है। उससे सिर टकराने का परिणाम जानते हो ?"

"शायद आपको यह पता नहीं कि जनता अपने संगठित बल से ऐसी चट्टानों को अपने पैरों से रौंद डालती है।"

"प्यारेलाल तुम अभी बच्चे हो। न राजनीति समझते हो और न राजतंत्र का कोप तुमने देखा है। तुम्हारे पिताजी नेकदिल आदमी हैं। रियासत के एक अच्छे कार्यकर्त्ता भी हैं। शिक्षा विभाग में रानी साहिबा ने उनकी पदोन्नति करने का आदेश दिया है। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी मूर्खताओं से उनकी नौकरी खतरे में पड़ जाये ?"

"नौकरी का यह खतरा तो सदा बना रहेगा। आने वाली पीढ़-पीढ़ियाँ भी इस अभिशाप को भोगती रहेंगी। इससे बेहतर है कि हम खुद इस निर्णायक युद्ध को निपटा दें।"

"क्या इसका अर्थ है कि तुम अकेले ही इस युद्ध को जीत लोगे ?"

"हर अच्छे कार्य में जनता का सहयोग मिलता है।" प्यारेलाल ने कहा।

ठहाका लगाते हुए दीवान साहब ने कहा—"उस जनता के सहयोग की आशा करते हो, जो भूख और गरीबी के कारण सैकड़ों स्थानों से टूट चुकी है।"

"असली भूख और टूटन ही क्रान्ति को जन्म देती है चाचा जी !"

"तो तुम सीधी तरह से रास्ते पर नही आओगे ?"

"मेरा रास्ता तो बहुत सीधा है, उलझा तो आप रहे हैं।"

छोकरे ! तू मुझे नहीं जानता, मैं अभी तुझे मिल की चिमनी में फिकवा सकता हूँ।"

"क्या आपने मुझे इसीलिए यहाँ बुलाया था ?"

"नहीं, मैं यह बताना चाहता था कि अब तुम्हारे मुँह से रियासत, रानी साहिबा और दीवान के विरोध में एक शब्द भी न निकालना चाहिए अन्यथा तेरी जीभ बाहर खींच ली जायेगी !" क्रोधावेश में दीवान ने कहा।

"आप तो हर दृष्टि से समर्थ हैं, फिर एक छोटे से लड़के से डरने की क्या आवश्यकता है आपको ?"

"प्रश्न डरने का नहीं है। अभी तक मैं सीधी अंगुली से घी निकाल रहा था पर लगता है, कहावत ठीक ही बनी है…"

"तो क्या अब मैं जा सकता हूँ ?" प्यारेलाल ने शान्त स्वर में कहा।

"जाने के पहले मेरी सारी बातें अच्छी तरह समझ लो।"

"आशा है, मेरा उद्देश्य भी आप समझ गये होंगे। मेरा जन्म हर प्रकार के अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए हुआ है। वह कार्य मैं करूँगा, परिणाम चाहे जो कुछ हो।"

"सुना है, मौत के समय चीटियों के पंख निकल आते हैं। तुम जा सकते हो।" दीवान ने गर्जना करते हुए कहा।

तब प्यारेलाल सीना ताने हुए उनके बंगले से बाहर निकले थे। उनके मुख पर एक अपूर्व तेज था।

अब प्यारेलाल ने अपना अभियान तेज कर दिया था। वे दीवान के द्वारा प्रताड़ित हर एक व्यक्ति से घर-घर जाकर सम्पर्क करने लगे और इस तरह थोड़े ही दिनों में उन्होने दीवान के विरोध में न केवल एक जीवंत वातावरण निर्मित कर लिया वरन् उनके अपराधो की सप्रमाण एक लम्बी सूची भी तैयार कर ली। इन अपराधों में हत्या, व्यभिचार, शोषण, अमानवीय यातनाओं आदि से सम्बन्धित अनेक प्रकरण थे।

एक दिन दीवान साहब के सिपाहियों ने उन्हें सूचना दी कि गोविन्दा जुर्माने की सारी धनराशि अदा नहीं कर रहा है। दीवान ने तब उसे अपनी कचहरी में बुलाया था। अपने ही सामने मारपीट करवाले के बाद उसे काले बिच्छू से भी कटाया था। पीड़ा से तड़प-तड़प कर गोविन्दा मूर्छित हो गया था तब उसी स्थिति में उसे शाम के समय शराब भट्टी की नाली मे पास फिकवा दिया था। इस घटना से मजदूर-जगत में खलबली मच गई। प्यारेलाल को भी इस घटना की सूचना मिली। दूसरे दिन ही उन्होने मजदूरों तथा छात्रों को मिलाकर दीवान के विरोध में एक विशाल जुलूस निकाला। दीवान चौक पर सभा कर उन्होंने दीवान के सारे कुकृत्यों की सूची पढ़कर भी सुनाई एक और स्वर से नारा बुलन्द किया—"इस अत्याचारी दीवन को तत्काल निकाला जाये। हमारी माँगें पूरी हों।"

जुलूस में हजारों की संख्या मे नर-नारी सम्मिलित थे। नारे लगाता हुआ जुलूस राजमहल के निकट पीपल और बटवृक्ष की छाया में खड़ा हो गया। तब प्यारेलाल और दो-तीन मजदूर नेता रानी साहिबा से मिलने राजहल में गये।

रानी साहिबा ने परदे की ओट में बैठे-बैठे कहा– 'प्यारेलाल! तुम्हारे

प्रयासों से मुझे दीवान के सारे अत्याचारों का पता लग गया है। तुम लोग शान्तिपूर्वक जाओ। मैं अभी उन्हें दीवान के पद से अलग कर रही हूँ।"

इस निर्णय से जनता हर्षोल्लास में डूब गई। 'रानी साहिबा जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूँज उठा।

●

छह

राजनांदगांव मे उच्च शिक्षा का प्रबन्ध न होने के कारण प्यारेलाल को मिडिल के बाद रायपुर जाना पड़ा। वहाँ से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने हिस्लाप कालेज नागपुर से इंटर की परीक्षा पास की। फिर जबलपुर से बी० ए० और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से १९१६ में वकालत पास की। नागपुर मे आपका सम्पर्क देश के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों से हुआ और भविष्य में वह बढ़ता ही गया। नांदगांव तो आपका गृह-नगर था, अतः यहाँ आप बराबर आते रहे। सरस्वती वाचनालय अभी भी आपके निर्देशन में चल रहा था। नांदगांव में आप सबसे पहले वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्र थे। आप यहीं रहकर वकालत भी करना चाहते थे किन्तु उनके आंदोलनात्मक कार्यों से रियासत आतंकित थी। अतः प्रयत्न करने पर भी उन्हें यहाँ वकालत करने की अनुमति नहीं दी गई। तब उन्होंने दुर्ग में अपना पंजीयन कराया था। वहाँ रहते हुए भी आप कुछ मुकदमों में राजनांदगांव बराबर आते-जाते रहते थे। दिन भर की व्यस्तता से उनके शरीर का अंग-अंग टूट रहा था। तभी उनकी भेंट हुई थी गोविन्दा से।

"क्या हाल-चाल है गोविन्दा! काम-धाम ठीक तो चल रहा है न ?" प्यारेलाल ने पूछा।

"ठीक ही है वकील साहब !" गोविन्दा ने उत्तर दिया।

"ही क्यों ?"

"मिल मैनेजर हम सबको सबेरे ६ बजे से काम पर बुलाता है और रात के ८ बजे तक हमें काम करना पड़ता है। बीच में केवल खाना खाने का समय मिलता है—आध-पौन घंटा।"

"लगातार १४ घंटे काम ?" प्यारेलाल ने पूछा।

"जी हां।"

"कैसे करते हो तुम लोग ?"

"न करें तो जायें कहां ?"

"मैंने तो आज केवल दो घंटे काम ज्यादा किया और यह हालत हो गई कि हाथ-पैर उठते नही हैं। तुम लोगों की क्या हालत होती होगी ?"

"हम लोगों की हालत क्या पूछते हो। अब तो जीने की इच्छा भी मर गई है। पशु की तरह काम करना पड़ता है और ऊपर से गालियां और हंटरों की मार भी सहनी पड़ती है, मजदूरी भी कम मिलती है।"

"तुम लोग कुछ कहते क्यों नहीं ?"

"किससे कहें ? जिससे कहो वही नौकरी से भगा देने की बात करता है।"

"रानी साहिबा के पास क्यों नहीं गये ?"

"हम मजदूरों को राजमहल के भीतर पांव नहीं रखने दिया जाता।"

"इसका अर्थ है कि यह मजदूरी एक नारकीय यंत्रणा है। क्या तुम लोगों का कोई संगठन नहीं ?"

"बन ही नहीं पाता। जो ऐसा प्रयत्न करता है उसके गुण्डों द्वारा हाथ-पैर तुड़वा दिए जाते हैं। उस बार आपने बहुत सहायता की थी हम

लोगों की। नया जीवन ही दिया था, इस बार भी बचा लें, नहीं तो हम सब यों ही घुट-घुटकर मर जायेंगे।"

"घबड़ाओ नहीं गोविन्दा ! अब हम मजदूरों का संगठन बनाएंगे। उन्हें उनके अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष करेंगे और इस अमानवीय गुलामी को नष्ट करेंगे।"

"आपकी जय हो वकील साहब !"

"तुम सब घर जाओ गोविन्दा ! संगठन मे ही देश का उद्धार निहित है। यही हमें अंग्रेजों के शोषण और उनकी गुलामी से मुक्ति दिला सकता है। मै कल से ही इस कार्य में अपने को समर्पित कर दूंगा।"

गोविन्दा घर चला गया था। प्यारेलाल के मन में अब नये संकल्प, नये विचार, नयी योजनाएं कौंध रही थी। वे सोच रहे थे कि मेरे लिए सबसे बड़ी समस्या है—दुर्ग में रहकर यहाँ के मजदूरों के बीच संगठन का कार्य करना। वह कार्य तभी प्रभावी सिद्ध होगा जब मैं उनके बीच रात-दिन रह सकूं। काश, यहीं वकालत करने की अनुमति मिल जाती। तो सारी समस्यायें सुलझ जातीं।

इस समय रियासत कोर्ट आफ वार्ड में थी। रानी साहिबा का शासन ४४ गाँवों पर था जरूर, पर प्रशासन के मामले में अंग्रेज पोलीटिकल एजेन्ट ही सर्वेसर्वा था। उसकी इच्छा के विरुद्ध यहाँ वकालत करने की अनुमति प्राप्त नहीं की जा सकती थी। प्यारेलाल सोचते हुए जा रहे थे –किसी तरह पोलीटिकल एजेन्ट को प्रसन्न करना आवश्यक है। उसी समय उन्हें जोर की एक आवाज सुनाई दी—"रामलीला का भव्य आयोजन, देखना न भूलें, अयोध्या की रामलीला, आपके नगर में पहली बार, ऐसी लीला न कभी आपने देखी और न सुनी। टिकट चार आना, आठ आने और एक रुपया। जरूर आइए, वरना सारी जिन्दगी पछताना पड़ेगा। केवल कुछ ही दिन और है। देखिए—अद्भुत, अपूर्व रामलीला ! मनोरंजन का मनोरंजन और धर्म का धर्म। यह जन्म भी सुधरेगा और अगला भी—रामलीला।" तरह-तरह की विचित्र वेशभूषा

पहने हुए कुछ विदूषक नगर में घूम-घूमकर रामलीला का प्रचार कर रहे थे।

प्यारेलाल को याद आया। लगभग पन्द्रह दिन पहले एक व्यक्ति कोर्ट में मारा-मारा घूम रहा था। उसे इस नगर में रामलीला प्रदर्शन करने के लिए शासन की अनुमति चाहिए थी। तब आगे बढ़कर प्यारेलाल ने ही उसका काम कराया था। पं० शर्मा तब विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहने लगे थे—"मैं तो यहाँ तीन दिनों से घूम रहा हूँ, पोलीटिकल एजेन्ट की भेंट करने का भी समय नही मिलता। प्रथम विश्व युद्ध का समय है न ? अंग्रेजो को इस समय केवल पैसा दिखाई देता है। जो पैसा नही दे सकता, वह बेकार का आदमी है। यहाँ न कोई धर्म को पूछता है न राम को। आपने हमारा काम इतनी जल्दी करा दिया, मैं धन्यवाद किन शब्दो मे दूँ, समझ नही पाता। कभी मुझे भी सेवा करने का अवसर दीजिए। रामलीला मण्डली मे आपका हार्दिक स्वागत है।"

प्यारेलाल सोच रहे थे—अंग्रेजो को इस समय केवल पैसा दिखाई देता है अर्थात् इस कमजोरी का फायदा अपने ढंग से उठाया जा सकता है। तब वे दुर्ग न जाकर सीधे पं० शर्मा के पास रामलीला मण्डली में ही पहुँच गये। पं० शर्मा ने उनका स्वागत करते हुए कहा - "हमारे अहोभाग्य वकील साहब, आप पधारे तो ! अब हमारा एक प्रदर्शन देखकर ही जाइयेगा। अधिक तो कुछ नही कह सकता पर हमारे कलाकारो की अभिनय-क्षमता से आप निराश नही होगे। ये उत्तर भारत बिहार, राजस्थान आदि का चक्कर लगाते हुए यहाँ पहुँचे हैं, इनकी वाणी मे वह तेजी और तड़प है कि सुनने वाले मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं।"

"धन्यवाद शर्मा जी ! पर मैं आपके पास एक विशेष कार्य से आया हूँ। आपको पहले बता देना चाहता हूँ कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम मेरे परम आराध्य हैं। इसलिए नहीं कि वे भगवान हैं, पर इसलिए कि वे पहले भारतीय हैं जिन्होंने उत्तर से लेकर दक्षिण तक सम्पूर्ण भारत का

एक अखण्डता प्रदान की थी और आर्यों तथा अनार्यों के मध्य रामेश्वरम् का सेतु बाँधा था।"

"यह तो मैं पहली बार सुन रहा हूँ वकील साहब! हमारे लिए तो भगवान राम मात्र भगवान राम थे, बस।" शर्मा जी ने कहा।

"नहीं, हमारे यहाँ जितने भी भगवान हुए हैं, वे सब विविधता में एकरूपता के सर्जक रहे हैं, उन सबका व्यक्तित्व राष्ट्रीय कोटि का रहा है। उनके जीवन में लोक-धर्म और अध्यात्म एकरस हो गया है। चाहे वे राम हों या कृष्ण, गौतम हों या कबीर, इनमें में किसी ने भी आदमी-आदमी में फर्क नहीं किया और न देश को टुकड़े टुकड़े करने के लिए किसी को प्रेरित किया। एक व्यापक महानता का निर्माण, भ्रातृत्व भाव का प्रसार, सत्य की विजय और असत्य की पराजय -- इनके जीवन-संघर्ष के मुख्य स्वर रहे है।

"वकील साहब! लगता है, राजनीति और वकालत के साथ-साथ आपको धर्म, दर्शन और संस्कृति का भी अच्छा ज्ञान है।" शर्मा जी ने कहा।

"शर्मा जी! मुझे सदा इस बात का दुःख बना रहता है कि अंग्रेज हिन्दुस्तान को अनेक सम्प्रदायों, जातियों, धर्मों, वर्णों, भाषाओं और तरह तरह के विभेदों का देश मानते हैं। उनका कहना है कि यह कभी एक राष्ट्र रहा ही नहीं। पर मेरा विश्वास है कि जब राम बानर, रीछ, भालू आदि जङ्गली जातियों से मैत्री-भाव स्थापित कर रावण जैसे प्रचण्ड और पराक्रमी भौतिकवादी सम्राट् को पराजित कर सके तो हम सब मिलकर अंग्रेजों को अपने देश से क्यों नहीं भगा सकते? राम की तरह हम सब भी अपने देश के पैतृक अधिकारों से प्रवंचित कर दिये गये हैं। हम भी वन-वन भटक रहे हैं। हमारी स्वतन्त्रता, विवेक शक्ति और आस्था रूपी सीता का भी अपहरण कर लिया गया है। फलतः अब हमें भी हर वर्ग, जाति और धर्म के लोगों को एकत्र कर अंग्रेजों से टक्कर लेनी है।"

"अब मेरे लिए क्या आज्ञा है वकील साहब ?" शर्मा जी ने प्रश्न किया।

"आप जानते हैं शर्मा जी कि युद्ध सदा दूरदर्शिता और कूटनीति से जीते जाते हैं। इस समय अंग्रेजों को जरूरत है पैसों की। पैसे पाकर वे प्रसन्नता से गद्‌गद् हो उठते हैं और उस स्थिति में वे फिर हमारा किसी भी सीमा तक जाकर फेवर कर सकते हैं।"

"वह बात सत्य है वकील साहब !"

"तब मेरी बात मानो, तुम कल राम नहीं रावण-लीला का प्रदर्शन करो और उससे जितनी आय हो उसे पोलीटिकल एजेन्ट को मेरे साथ चलकर सौंप दो।"

"उससे होगा क्या।"

"एक बहुत बड़ी क्रांति ?"

"क्रांति, पर कैसे ? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, वकील साहब !"

"उससे आपको कुछ भी लाभ नहीं होगा, पर मुझे हो सकता है।"

"आपके लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ वकील साहब।" आप क्रांति के लिए कटिबद्ध हैं और क्रांति की ही इस देश को आवश्यकता है, पर रावण दरबार में करना क्या होगा हमें ?' शर्मा जी ने कहा।

' रावण, अंग्रेजों और यहाँ के राजा-सामंतों के दरबारों में तुम्हें क्या कोई अन्तर दिखाई देता है ?"

"बस, अब मैं सब कुछ समझ गया। शर्त यह है कि उस समय आपको भी यहाँ उपस्थित रहना पड़ेगा।"

"मैं जरूर रहूँगा।" कहकर प्यारेलाल उठ बैठे।

उसी रात्रि से 'रावण-दरबार' का विज्ञापन प्रारम्भ हो गया था। विदूषक कह रहा था—भाइयो, बहनो, दादा, दादी और भाभियो ! देखना न भूलें, खुद आइए, साथ में बच्चों को लाइये, पड़ोसियों को

लाइए — रावण-दरबार में ऐसे-ऐसे दृश्य जो न आपने देखे न सुने, ऐसी रावण लीला जो रामचरितमानस में भी नहीं। सर्वथा अनूठी, अजीबो-गरीब। टिकट—एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, बच्चों के लिए विशेष रियायत—आठ आने मात्र। केवल कल और फिर कभी नहीं— 'रावण-दरबार, रावण-दरबार, रावण-दरबार।''

दूसरे दिन रात्रि के ठीक साढ़े आठ बजे बजरंगबली ने रावण का वेश धारण किया। रुई बाँधकर अपने अंगों को थोड़ा और मोटा बनाया, मूछें हाथ-हाथ भर की निकाली और हाथ में चन्द्रहास तलवार लेकर बैठ गया कुर्सी पर। बगल में बैठे थे विभीषण और दूसरे मंत्रीगण। परदा खुला। विदूषक ने आकर बड़ी जोर से महाराजाओं के महाराजा रावण की जय जयकार की। फिर आरती उतारी और उसे जनता के मध्य घुमाने लगा। दूसरे विदूषक ने उसे रोका—

"अरे! अरे! रावण की आरती में पैसे क्यों चढ़वा रहा है?"

"क्रिया-कर्म के लिए?"

"ठीक है, ठीक है, बूढ़ा भी तो हो रहा है तू।"

"मेरे बूढ़े होने से क्या होता है। यह क्रिया-कर्म तो महाराजाधिराज का होगा।"

"क्या परम आराध्य श्रद्धेय रावण का?"

"हाँ!"

"तू पगला गया है? अरे, हमारे महाराज के राज्य में कभी सूर्य नहीं डूबता उनकी नाभि में अमृत है। वे चिरंजीवी हैं। उन्होंने जगत-जननी सीता माँ का भी अपहरण कर लिया है। उनकी समता कौन कर सकता है?"

"हाँ उनकी समता कौन कर सकता है। उनके नौ सिरों के ऊपर दसवाँ सिर गधे का है। गधे का सिर। (ठहाका लगाकर) आज ऐसा कौन है जिसके सिर के ऊपर यह दसवाँ सिर न दिखाई देता हो?"

"अरे राम राम भजो, अपने राम दो-दो सिर नहीं रखते ?'

"तो यह गधे का सिर फिर किसके सिर के ऊपर दिखता है ?"

"जो गुलाम हो ?"

"मतलब ।"

'जो परतंत्र हो ।"

"ठहर, मैं अभी महाराजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट्, दानवीर महा-महिम मानवीय रावण का ध्यान इस ओर आकर्षित करता हूँ ।" उसने दरबार में जाकर रावण से निवेदन किया—

"महाराज ! आपके राज्य में अंधेर हो गया । यह छोटा विदूषक गुलामी और परतंत्रता जैसे नापाक शब्दों का उच्चारण करता है ।"

रावण : इसे दस कोड़े गुलामी के और दस परतंत्रता के लगाये जायें । क्यों विभीषण ठीक है न ?

विभीषण : महाराज ! आपको सब शोभा देता है ।

रावण : विदूषक ! तूने भी अपनी जीभ से इन शब्दों का उच्चारण किया है । अतः तुझे भी बीस कोड़ों की सजा मिलेगी । क्यों सुषेण ठीक है न ?

सुषेण : महाराज की न्याय की जय हो !"

रावण : पेशकार ! अगर ऐसा कोई दूसरा मामला हो तो उसे भी प्रस्तुत किया जाये ।

पेशकार : महाराज ! लंका का एक रजक अपने घर में जोर-जोर से वंदे मातरम् कह रहा था ।

रावण : इसका क्या अर्थ होता है विभीषण !

विभीषण : महाराज ! वह कह रहा है कि पृथ्वीपति महाराजाधिराज लंकेश्वर की जय हो । वे इस समय भारत भूमि के जीवों का पोषण करते हैं ।

रावण : सुषेण ! क्या यही अर्थ होता है, इस शब्द का ?

पेशकार : महाराज ! यह शब्द न वेदों में है, न वेदान्तों में । न यह

दर्शन का शब्द है और न संस्कृत का। लगता है यह जम्बू-द्वीप की किसी पिछड़ी हुई जंगली जाति का शब्द है।

रावण : मैं जानता हूँ। बंदे का अर्थ है बंदर और मातरम् का अर्थ है तैर नहीं सकता अर्थात् हमारी लंका के चारों ओर जो समुद्र है, उसे बंदर नहीं तैर सकता।

सुषेण : महाराज ! इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा अर्थ नहीं हो सकता।

रावण : मूर्ख ! बंदर नहीं तैर सकता तो क्या आदमी तैर सकता है? पेशकार ! उस रजक को सौ बेंत लगाये जायें। इस प्रकार की अफवाहों से देश की सुरक्षा व्यवस्था का पता चलता है। यह शब्द हमारे अखण्ड साम्राज्य के लिए कभी भी घातक सिद्ध हो सकता है।

पेशकार : जैसी आज्ञा महाराज ! कल एक चोर भी चोरी करते हुए पकड़ा गया है। उसके लिए क्या आज्ञा है?''

रावण : किसने पकड़ा ?

पेशकार : कोतवाल साहब ने !

रावण : चोर कब चोरी कर रहा था ?

पेशकार : दोपहर के समय महाराज और वह भी बीच बाजार में।

रावण : उस कोतवाल को तत्काल निलंबित किया जाये। उस मूर्ख को यह नहीं मालूम कि कोई भी सामान्य चोर दिन-दहाड़े चोरी नहीं कर सकता। उस चोर का नागरिक अभिनन्दन किया जाये और उसे कोई मंत्री पद दिया जाये। उसके परिवार वालों को पेंशन की व्यवस्था की जाये। ऐसे चोरों का राजनीतिक भविष्य रावण--राज्य में उज्ज्वल है। पेशकार ! क्या उस कोतवाल को यह भी नहीं मालूम कि चोरियाँ यदि रावण-राज्य में नही होगी तो क्या राम राज्य

में होंगी। ऐसे कर्त्तव्य-विमुख अधिकारियों को जेल भेज दिया जाये।

विभीषण : स्वागत योग्य निर्णय है महाराज !

रावण : पेशकार ! कल हमारे राज्य में हिंसा, बलात्कार, व्यभिचार शोषण, आन्दोलन, गोली और लाठी-चलाने की कितनी घटनाएँ घटीं ? कितने लोगों को कारागार भेजा गया ?

पेशकार : आपके प्रताप से एक भी नहीं महाराज !

रावण : क्या कहा, एक भी नहीं ? आर्यावर्त का यह भूखण्ड इतना पिछड़ा हुआ ! तुम सब लोगों के जीवन को धिक्कार है ! क्या तुम सब अपने-अपने घरों में बैठकर शहद चाटते रहे ? तुम लोगों को तो अभी तक शर्म से चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। यह सब तुम लोगों का षड्यंत्र है। तुमने मेरे राज्य को रामराज्य बना दिया।

सुषेण : महाराज ! मैं चुल्लू भर पानी में डूबने जा रहा हूँ।

रावण : इस विभीषण को भी अपने साथ ले जाओ।

सुषेण : जैसी आज्ञा महाराज !

रावण : नहीं, विभीषण अभी तुम्हारे साथ नहीं जायेगा। उसे दंडित किया जायेगा। विभिषण ! क्या तुम्हें यह बात नहीं मालूम कि जनता को इन छोटी-मोटी लड़ाइयों और समस्याओं में जान-बूझकर उलझा कर रखना चाहिए अन्यथा वह राजतंत्र से उलझने के लिए तैयारें हो जाती हैं। क्या तुम्हें यह बात नहीं मालूम कि चोरी, डकैती, बलात्कार, शोषण, हिंसा जैसे कार्यों से जनता ही जनता की शक्ति को नष्ट करती रहती है अतः उसे दूसरे अच्छे कार्य सम्पन्न करने का न तो समय मिल पाता है और न उसके पास शक्ति ही रह जाती है।

विभीषण : जानता हूँ महाराज !

रावण : फिर जानते हुए तुमने शासन-तंत्र शिथिलता क्यों आने दी ? दस-बीस जगह आगजनी, चोरी और हत्याओं से तुम्हारी कौन सी क्षति होने वाली थी ?

विभीषण : महाराज ! क्षमा किया जाये !

रावण : रावण न क्षमा माँगता है और न करता है। तू अब राम के शिविर में जा और वहाँ कहना कि मेरे भाई ने मुझे लात मारकर निकाल दिया है। राम जब उस बनावटी मृग को नहीं समझ सका तो तुम जैसे आधे राक्षस और आधे आदमी को कैसे समझ सकता है ? शत्रु का भाई समझ कर वह तुझे गले लगायेगा तो तू पीछे से उसका काम तमाम कर देना। फिर दण्डकारण्य का पूरा राज्य तुम्हारा। चाहे तो अयोध्या को भी अपने पास रख लेना।

विभीषण : जी महाराज !

रावण : सुनो, राम की सेना में कोई ३०-४० करोड़ बन्दर है वही वंदे मातरम् वाले। उनके बीच पहले थोड़ा-बहुत व्यापार करने की अनुमति ले लेना, फिर समय पाकर बड़े-बड़े बानरों को आपस में भिड़ा देना। फिर बंदर-बाँट का नाटक रचना और कभी किष्किन्धा और कभी ऋष्यमूक अपने अधिकार में कर लेना। भारत भूखण्ड, आर्यावर्त की जनता संगठित न हो सके, तुम्हारा यही प्रयास होना चाहिए।

विभीषण : महाराज की जैसी आज्ञा।

रावण : पेशकार ! विभीषण को अयोध्या का राजतिलक करो और फिर पीछे से तीन लातें लगाओ, ताकि उसे सारी योजनाएँ सदा याद रहें।

पेशकार : महाराज की जय हो ! कुछ मजदूर भी आपके चरणों का दर्शन करने के लिए पधार रहे हैं।

रावण : क्या कहना चाहते है वे ?

पेशकार : उनका निवेदन है कि सबेरे से शाम तक लगातार चौदह घंटो तक काम करते हैं। वे बुरी तरह थक जाते हैं, ऊपर से पूरी मजदूरी भी उन्हें नहीं दी जाती।

रावण : पेशकार ! क्या हमारे राज्य में मजदूर नामक जीव अभी तक जिन्दा हैं ?

पेशकार : जिन्दा हैं महाराज !

रावण : कुछ जहाज भेजकर भारत से नये तगड़े आर्य मजदूर ले आने की व्यवस्था करो और इन मजदूरों के काम की अवधि दो घंटे और बढ़ा दी जाये ताकि इनके पास अब शिकायत करने का भी समय न बच सके। समझा कि नहीं ?

पेशकार : महाराजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट् महामहिम रावण की जय हो।

रावण : अब आज का दरबार यहीं स्थगित किया जाता है। कहकर रावण परदे के पीछे चला गया।

सबेरे-सबेरे जब प्यारेलाल के साथ पं० शर्मा एक रात की सारी आमदनी लेकर अंग्रेज पोलीटिकल एजेन्ट के पास पहुँचे तो यह अयाचित भेंट देखकर वह बेशरम के फूलों की तरह फूल कर कहने लगा— ओ, वेरी वेरी गुड प्यारेलाल, वेरी गुड। वन थाउजेन्ट फार ह्वाट ? हम तुमसे बहुत खुश है। बोलो, इसके बदले में क्या चाहता है ?

"मैं नांदगांव में वकालत करने की अनुमति चाहता हूँ। प्यारेलाल ने कहा।

"एग्रीड ! तुम आज से यहाँ वकालत करने को स्वतन्त्र है।"

"थैंक्यू सर ! कहते हुए वे शर्मा जी के साथ बंगले के बाहर आ गये। रास्ते में शर्मा जी ने कहा—

"वकील साहब ! रावण-दरबार की चर्चा रात में ही चारों ओर फैल चुकी है। उसके व्यंग्य-बाणों से रियासती अधिकारी और अंग्रेज बौखला उठेंगे।"

"इसीलिए तो सबेरे सबेरे हम एजेन्ट के यहाँ पहुँचे थे। पर सब कुछ नहीं हो सकता शर्मा जी ! किसमें इतनी हिम्मत है जो पोलीटिकल एजेन्ट का विरोध कर सके।" प्यारेलाल ने कहा।

"आप ठीक कह रहे हैं वकील साहब ! मुझे खुद इतनी उम्मीद नही कि हमारा यह प्रदर्शन इतना सफल होगा। लोग रावण के व्यंग्यवाणों से हँस-हँसकर लोट-पोट हो रहे थे।

"शर्मा जी ! अब तुम रोज ही ऐसे प्रदर्शन दो। गाँव-गाँव जाओ और रामलीला के माध्यम से जन-जागरण का वातावरण बनाओ। तभी हमारा देश क्रांति और स्वतन्त्रता की दिशा में आगे बढ़ सकता है।" प्यारेलाल ने कहा।

"मैं भी अब यही सोचने लगा हूँ। क्योंकि गुलामी की यह जिन्दगी अब सहन नहीं होती।"

"तुम्हारे पास तो जन-क्रांति का एक बहुत सशक्त साधन है। तुम गाँवों में चरखे और खादी का भी प्रचार करो। यही हमारे देश में आर्थिक सुदृढ़ता लाने के लिए एकमात्र विकल्प है। खादी व्यक्ति की आवश्यकताओं को कम करती है, आडम्बर का नाश करती है और एक नये स्वाभिमानी, स्वावलम्बी जीवन की नींव भी रखती है।"

"पर ये बातें गाँव के लोग कुछ देर से समझते हैं !"

"पर समझते जरूर हैं, क्योंकि खादी का दूसरा विकल्प है ही नहीं। यह हमारे देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति का मूल जीवन-दर्शन है। मैं सन् १९०६ से ही इस कार्य में लगा हूँ। इसलिए बहुत अच्छी तरह

जानता हूँ कि खादी भारत की आम जनता के लिए कितनी राहत प्रदान करती है। वस्तुतः गांधी जी ने अंग्रेजों की धूर्तता और शोषण की प्रवृत्तियों को अच्छी तरह से समझ लिया है। इसलिए उन्होंने स्वावलम्बन का जो माध्यम हमें दिया है उससे अंग्रेज भी आतंकित हो उठे हैं।

"बात सही कह रहे हैं ठाकुर साहब ! मैं तो घूमता ही रहता हूँ। खादी के प्रचार-प्रसार के कारण अब दूर-दूर के गांवो मे भी पहले जैसा आतंक, भय, शोषण और अन्याय का वातावरण नही रह गया है। चेतना के निचले धरातल पर ही सही, पर एक क्रांति जन्म तो ले चुकी है।"

"अब इस चिनगारी को प्रज्ज्वलित रखने का दायित्व आप जैसे कलाकारों पर ही है शर्मा जी।" प्यारेलाल ने कहा।

"वकील साहब ! इस क्रांति-यज्ञ मे यदि मुझे अपने प्राणों की भी आहुति देनी पड़े तो भी मैं उसे अपना सौभाग्य समझूँगा। मैं जानता हूँ कि प्राप्त होने वाली स्वतन्त्रता सबके लिए होगी अतः उसकी प्राप्ति में हम सबका योगदान भी जरूरी है" पं० शर्मा ने कहा।

बातों ही बातों में प्यारेलाल कब अपने अस्थायी कार्यालय में आ गये, पता ही नही चला। वहाँ बहुत सारे मजदूर-भाई उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे अतः उन्होने शर्मा जी ने कहा—"शर्मा जी ! आपने मेरे लिए जितना बड़ा त्याग किया है, उसका मूल्य धन्यवाद जैसे शब्दों द्वारा नहीं चुकाया जा सकता। आशा है मेरी बातों को ध्यान में रखेंगे।"

"वकील साहब ! धन्यवाद तो मुझे देना चाहिए। खैर, आपने जो पथ-प्रदर्शन किया है अब वही मेरा पाथेय है। अच्छा, अब चलता हूँ। नमस्कार !"

आशा और प्रयत्नों के विपरीत प्यारेलाल ठाकुर की राजनांदगांव में ही वकालत करने की अनुमति मिलने का समाचार दीवान साहब के लिए मर्मान्तक प्रतीत हुआ। उन्हें लगा कि जैसे उनका सारा शरीर ही

गरम तवे पर रख दिया हो या फिर खौलते कड़ाह में उन्हें फेंक दिया गया हो। वे कुछ प्रतिष्ठित लोगों के साथ सन्ध्या समय पोलीटिकल एजेन्ट के बंगले पर पहुँचे और उनसे निवेदन किया कि ठाकुर प्यारेलाल को यहाँ वकालत की अनुमति देना रियासत के हित में नहीं हुआ।

"तुम लोग खुद प्रशासन का ए० बी० सी० नहीं जानता। इट इज यूजलेस टू से ही इज ट्रेरर। ही इज जाइन्ट, ही इज ए राक। मानता हूँ कि खेल के मैदान में उसकी कोई टक्कर नहीं। उसके हाथ में गेंद लगी तो मतलब गोल हो गया। पर इसका यह अर्थ तो नहीं है कि वह आदमी नहीं है। कमजोरियाँ तुम सबके भीतर हैं। है तुम लोगों में उसके समान ईमानदारी, साहस, क्रियाशीलता, तत्काल निर्णय लेने की क्षमता। ही इज ए रीजनेबिल मैन, ही इज फर्स्ट क्लास लाइयर। उसकी तर्क-शैली सुनकर कोई भी मुग्ध हो जायेगा। ही इज फार कामन मैन, ही इज मेड फार कामन काज।" पोलीटिकल एजेन्ट ने गुस्से में कहा।

"यस सर ! आप ठीक कह रहे हैं।" दीवान ने मंद स्वर में उत्तर दिया।

"डू यू थिंक ही इज नाट ए साउंड मैन, ही इज बैड मैन लाइक आल आफ यू, अंडरस्टैण्ड मी ?"

"यस सर" कहते हुए सभी लोग बंगले के बाहर निकल आये थे।

●

सात

•

प्यारेलाल श्रमिक संगठन का संकल्प कर चुके थे। दुर्ग से आकर वे राजनांदगांव में वकालत भी करने लगे थे। वे केवल मजदूर भाइयो के मामले ही अपने हाथ में लेते और उनकी निःशुल्क पैरवी करते। दिन भर वे यदि नांदगांव में रहते तो रात को किसी गांव में। खादी का एक वस्त्र मात्र पहने हुए देखकर जनता जोर से चिल्लाती—'लुगरा पहनो खादी के, जय बोल महात्मा गांधी के।' प्यारेलाल जनता से उसकी मातृभाषा में बात करते। अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले शोषण और अत्याचारो की बातें बताते, संगठित होने का आह्वान करते खादी और चरखा का प्रचार करते, चरखों का मुफ्त में वितरण कराते और गांव के लोगों द्वारा काते गए सूत के विक्रय की व्यवस्था करते। पर उन्हे लगा कि अधिकारियों और प्रशासन की तेज निगाहें सदा उनका पीछा करती रहती हैं। अतः उन्होंने अपने कार्यक्रमों में परिवर्तन किया और पहले अधिकारियो से अपनी मित्रता बढ़ानी प्रारम्भ की। वे उनके क्लबों में जाने लगे। उनके साथ रमी और ब्रिज भी खेलते, जानबूझ कर हारते भी और इस तरह प्रशासन की दृष्टि में वे बदले हुए व्यक्ति के रूप में दिखाई देने लगे। किन्तु भीतर ही भीतर उनका संगठन का कार्य अब भी चल रहा था। मजदूरों से मिलना, उनकी कठिनाइयां हल करना, उनके घर जाना, उनके साथ भोजन करना, उनका विश्वास अर्जित करना—उनके दैनिक जीवन के कार्य थे।

उस दिन शाम को प्यारेलाल लेबर कालोनी में आ रहे थे। रास्ते में उनकी भेंट हो गई करमू पहलवान से। फूलपुर का करमू मिल में मजदूर

है, पर उसे काम न करने का वेतन मिलता है। उसका काम है उन मजदूरों को ठीक करना जो मिल में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाते हैं या अपनी पूरी मजदूरी मागते हैं। उस दिन करमू ने गोविन्दा को पीट दिया था क्योंकि उसने दूसरे मजदूरों से पहले ही काम बन्द कर दिया था। इतना ही नहीं, उसका सारा वेतन भी छुड़ा लिया था। जब पूरा काम नहीं किया तो वेतन कैसा? उस समय करमू एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठा हुआ गाँजे की दम लगा रहा था। पास ही में कुछ खाने और पीने का सामान भी रखा था। उसके दो-चार भक्तगण भी बैठे थे। प्यारेलाल को पास आते देखकर करमू ने कहा—

"नमस्कार वकील साहब! इधर कैसे भटक गये। हमारे लायक कोई सेवा हो तो बताइये। किसी को ठीक करना है क्या?"

"अरे भाई करमू तुम! तुम्हारे पास ही आया हूँ। किसी आदमी को नहीं, पूरी व्यवस्था को ही ठीक करना है और वह बिना तुम्हारे सहयोग के नहीं हो सकती।"

"कौन-सी व्यवस्था! रियासत की, मिल की या अंग्रेज हुकूमत की? हमारे पास सब की दवाइयाँ हैं। किसमें इतनी ताकत है जो करमू के पंजे से बच सके?"

"सुना है, आज गोविन्दा को भी आप लोगों ने ठीक कर दिया?"

"अरे वकील साहब! केवल दो-चार थप्पड़, दो-चार लातें। पर यह तो प्रेम से समझाने की हमारी भाषा है। हाँ, अगर अब भी वह नहीं समझा तो हम उसे ठिकाने लगा देंगे।" करमू ने कहा।

'भाई करमू! मैं तुमसे इसी सम्बन्ध में बातें करना चाहता हूँ। क्या तुम चाहते हो कि मिल के देशी-विदेशी अधिकारी तुम्हारे बल पर भोग-विलास, सुरा और सुन्दरी में डूबे रहें?"

"हम भी कहाँ काम करते हैं वकील साहब! केवल हमें भोग-विलास

के लिए ही दिया जाता है। फिर रोज ये बोतलें, मुर्गा, मटन और क्या नहीं मिलता मुफ्त में ? सब आपकी कृपा है वकील साहब !"

"पर क्या तुमने यह सोचा है कि तुम कितने हजार मजदूरों का शोषण कर रहे हो ?"

"वकील साहब ! यहाँ शोषण वगैरह कुछ नहीं होता, यह संसार है, मस्ती और ठबके के साथ रहने के लिए। खाना, पीना और मौज करना। यहाँ काम करने वाले ही बेमौत मरते हैं।"

"करमू ! कल्पना करो, यदि सारे मजदूर एकत्र हो जायें और तुम लोगों को घेर लें, तब क्या होगा ?"

"वकील साहब ! हम लोग सपने नहीं देखते। हमारा अकेला राम-पुरिया ही सौ-पचास लोगों को साफ कर देगा।"

"कुछ समय पहले यहाँ छात्र-आन्दोलन हुआ था। दीवान हटाओ आन्दोलन में तो तुमने भी साथ दिया था। अगर ये मजदूर संगठित होकर इसी तरह का आन्दोलन तुम्हारे विरोध में कर दें तो क्या मिल के अधिकारी तुम्हारा साथ देंगे ? और कितने दिनों तक ?"

'इस बात पर तो हमने आज तक नहीं सोचा। क्या ऐसा सम्भव है ?" करमू ने कहा।

"असम्भव कुछ नहीं होता करमू ! फिर तुम तो मूलतः मजदूर हो। तुम्हें मिल के मजदूर-भाइयों के हितों की रक्षा करनी चाहिए या मिल के अधिकारियों की ?"

"क्या सोचते हो चन्दू भाई ! क्या वकील साहब गलत कह रहे हैं ?" करमू ने अपने साथी चन्दू से पूछा।

"लगता तो सही है। पर हमने तो आज तक कुछ सोचा ही नहीं। जो हुक्म मिला उसे पूरा कर दिया। अपने लिए सब कुछ गलत है और सब सही है।"

"पर हैं हम मजदूर ही।" चन्दू ने कहा।

"मजदूर रहकर भी तुम्हें उतनी ही सुविधाएं मिल सकती हैं, जितनी अभी प्राप्त कर रहे हो। अन्तर यह है कि अभी ये सुविधायें हड्डी के कुछ टुकड़े हैं। दूसरी स्थिति में वे तुम्हें अधिकार के रूप में मिलेंगी।" प्यारेलाल ने करमू से कहा।

"वकील साहब! क्या मजदूर का भी कोई अधिकार होता है? वह तो सिर्फ अधिकारियों की मरजी पर जिन्दा रहता है।"

"मजदूर भी नागरिक होता है, उसके भी अधिकार हैं और हम तुम सबको वे अधिकार दिलाना चाहते हैं। इसके लिए संघर्ष भी करने के लिए तैयार हैं।"

"तो इसमें कठिनाई क्या है?"

"सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि मजदूर सम्मिलित स्वर में अपने अधिकारों की माँग नहीं करते?"

"उनकी माँग तो हम कल ही करा सकते हैं। पर अधिकार हैं कौन से? हम तो यह भी नहीं जानते।"

"काम के घंटे कम करवाना। मजदूरी जो अभी आधी मिलती है, उसे पूरी माँगना.....।"

"क्या कहा? काम के घंटे कम और मजदूरी दुगुनी प्राप्त करने का अधिकार है वकील साहब हमें?"

"हाँ, करमू! और वह भी वैधानिक अधिकार। कोई भी कम्पनी आठ घंटे से अधिक काम नहीं ले सकती। मजदूरों के श्रम का शोषण भी नहीं किया जा सकता। विश्व के दूसरे देशों में मजदूरों के बड़े-बड़े संगठन हैं। उनके अस्पताल हैं, बैंक हैं, मनोरंजन क्लब हैं, मजदूरों के बच्चों के लिए विद्यालय हैं, पार्क हैं, कालोनी हैं। ये सारी सुविधायें यहाँ के मजदूरों को क्यों नहीं प्राप्त होनी चाहिए?"

"जरूर होनी चाहिए वकील साहब! अगर आप साथ दें तो यह सब हमें भी प्राप्त हो सकता है।"

"हम साथ देने के लिए ही तुम्हारे पास आये हैं। इस समय हमे भीतर-ही-भीतर संगठित होना है। एक श्रमिक कल्याण फंड भी बनाना है, जिसके द्वारा जरूरतमंद भाई-बहनों की सहायता की जा सके। अपनी माँगों को मनवाने के लिए हमें आंदोलन और हड़तालें भी करनी पड़ सकती हैं। इसमें सभी का सहयोग चाहिए। जरा-सी फूट हमारे उद्देश्यो को नष्ट कर देगी।"

"आप जैसा कहेंगे, हम लोग वैसा ही करेंगे वकील साहब!"

"मैंने गोविन्दा से बात की है। वह ईमानदार और लगनशील आदमी है। फंड एकत्र करने का काम उसे सौंप दिया है। तुम्हें उसकी सहायता करनी है और सभी को राजी करके अपने-अपने एक दिन का वेतन इस फंड में जमा करवाना है, ताकि जल्दी ही हमारे पास पर्याप्त धन हो जाये।"

"यह कार्य हम आज से ही प्रारम्भ कर देंगे वकील साहब! जो भाई बातों से नहीं मानेंगे, उन्हें हम लातों से मना लेंगे।"

"नहीं, हृदय का परिवर्तन ही अधिक स्थायी और विश्वसनीय होता है। हिंसा, घृणा की भावना को जन्म देता है तथा अहिंसा, क्षमा, प्रेम और सहयोग को। हमारा रास्ता गांधीवादी है। हम लोग रोज मिलते रहें तो हमारी कठिनाइयाँ अपने आप हल हो जायेंगी।"

उसी दिन घर लौटते समय प्यारेलाल की भेंट सुमित्रा से हो गई थी। वह अपने आँगन में बैठी रो रही थी। प्यारेलाल ने पूछा—"अरे सुमित्रा! क्यों रो रही हो?"

"वकील साहब! मैं तो लुट गई! आज मिल के गुण्डों ने उनको बुरी तरह पीटा है।"

"सब जानता हूँ सुमित्रा! मैं खुद अस्पताल गया था, ज्यादा चोटें नहीं हैं। पट्टी करके छोड़ दिया गया है। सम्भव है गोविन्दा घर भी आ गया हो।"

"आये थे, पर दवा भूल आये। सो फिर से लेने गये हैं। पर मेरी समझ में नहीं आता क्या करूँ। पिछले हफ्ते के सारे पैसे कारिंदे [illegible] ले गये और इस बार के करमू तथा उनके गुण्डों ने छुड़ा लिया। अब सप्ताह भर का खर्च कैसे चलेगा ?"

"क्यों तुम भी तो काम करती हो ? क्या तुम्हें पैसा नहीं मिलता ?"

"पैसा मिलता तो है, पर आदमियों की तुलना में कम और वह भी पूरा कभी नहीं मिलता। पूरे पैसे माँगने पर गालियाँ और धमकियाँ मिलती हैं। नौकरी से हटा देने की बात कही जाती है।"

"ऐसा कितने दिनों तक चलेगा सुमित्रा ! प्यारेलाल ने पूछा।"

"मैं क्या बता सकती हूँ वकील साहब ! किस्मत ही ऐसी है, किसे दोष दें। पूर्व जन्म के पाप हैं, उन्हीं को भोग रही हूँ।"

"यह पूर्व जन्म का नहीं, असंगठित रहने का पाप है। जब तक सारे मजदूर एक नहीं होते तब तक उनका इसी प्रकार शोषण होता रहेगा, उन्हें जीने का अधिकार नहीं दिया जायेगा। इसी संदर्भ में मैंने करमू से बात की है। वे मजदूर संगठन का कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं। गोविन्दा से भी बात हो चुकी है। तुम भी महिलाओं का संगठन बनाओ।"

"मैं कुछ समझी नहीं।" सुमित्रा ने कहा।

"तुम महिला मजदूरों को जाग्रत करो। उनके मन में साहस और स्वाभिमान के भाव भरो। अभी यहाँ के मजदूरों को जानवरों की तरह काम करना पड़ता है, फिर वे दूसरे देशों के मजदूरों की तरह सम्मान-पूर्वक काम करेंगे। काम के घन्टे भी घटकर आधे हो जायेंगे। नौकरी पक्की हो जाएगी, साठ वर्षों के बाद सेवा निवृत्त होने पर पेन्शन मिलेगी। क्या तुम यह सब लाभ नहीं लेना चाहती ?" प्यारेलाल ने कहा।

"क्यों नहीं, वकील साहब ! जब आप हमारे लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हैं तो हमें ये सारी सुविधायें मिलकर रहेंगी। हम विश्वास

दिलाते हैं कि इन कार्यों के लिए हम सब महिलाएँ एकजुट होकर कार्य करेंगी। आपके इशारे पर प्राण भी देंगे पर पीछे कदम नहीं रखेंगे।" सुमित्रा ने कहा।

"सुमित्रा! मुझे विश्वास है कि तुमने जो कुछ कहा है, कार्य भी ठीक वैसा ही होगा। किन्तु अभी कुछ दिनों तक हमें चुपचाप कार्य करना है। अच्छा अब हम चलते हैं। फिर अब रोज ही मिलते रहेंगे।"

दूसरे दिन प्यारेलाल ने अपने मित्रों से इस विषय पर चर्चा की थी। उनके दाहिने हाथ थे शिवप्रसाद और बायें हाथ रतनलाल। शिवप्रसाद का रक्त जरा जल्दी खौलता था और रतनलाल ठंडी प्रकृति के थे। शिवप्रसाद ने कहा—

"स्वतन्त्रता और अधिकार भीख में नहीं मिलते। इन्हें सुविधा भोगी अधिकारियों से छीना जाता है।"

"छीनने की ताकत चाहिए और अभी हमारी ताकत बिखरी हुई है। इस उपक्रम में हम बंदूकों की गोलियों से भून दिये जायेंगे।" रतनलाल ने उत्तर दिया।

"क्या तुम बन्दूकों से डरते हो?"

"डरता नहीं, पर उनके सामने खड़े होना भी तो बुद्धिमता नहीं है।

हिंसा का एक मात्र मुँहतोड़ उत्तर उससे ज्यादा हिंसा ही हो सकती है अंग्रेज और तथाकथित भारतीय अधिकारी गाँधीवादी तरीकों से हमारी बातें समझ नहीं सकते। इनके मुँह को आदमी का खून लग चुका है।'उनका यह चस्का तभी छूटेगा जब कि उनका मुँह ही तोड़ दिया जाये।"

"शिव, तुम ठीक कहते हो, उग्रवादी हो न, पर हमें युगों-युगों से ठंडी जनता का भी सहयोग चाहिए। उसके लिए गाँधीजी वाला रास्ता ही सीधा और साफ है। अहिंसा बड़ी से बड़ी हिंसा को शान्त कर देती है।"

"अंग्रेज पुलिस की नृशंसता क्या तुमने देखी नहीं है। वे अपना पौरुष सामान्य जनता पर ही प्रदर्शित करते है। वे क्रूरता से भरे हुए हैं। अहिंसा के द्वारा राक्षसों के हृदय में करुणा का संचार नहीं हो सकता।" शिव ने उत्तर दिया।

'शिव ! यह समय वाद-विवाद का नहीं है। अभी हमें मजदूरों के साथ रहकर उनका विश्वास अर्जित करना है और आन्दोलन के लिए उन्हें तन, मन और धन से तैयार करना है। मजदूर शोषण और असंतोष के अंध-महासागर में गहरे डूबते जा रहे हैं। कहीं समय के पूर्व ही विस्फोट न हो जाये वरना हम सब शासकीय दमन के द्वारा इस तरह तोड़ दिये जायेंगे कि फिर वर्षों तक एकत्र नहीं हो सकेंगे। प्यारेलाल ने वाद-विवाद शान्त करते हुए कहा।"

इस तरह मजदूरों को सङ्गठित करने, समझाने, सहयोग लेने और उनके अधिकारों की व्याख्या का कार्य चुपचाप चलने लगा। मजदूर पहले सशंकित होते, भागते भी पर कहीं कोई विकल्प और आश्रय न पाकर लौट आते। रात के गहरे सन्नाटे में बैठकर प्यारेलाल अपने साथियों से दिन भर की प्रगति की समीक्षा करते और फिर नयी-नयी योजनाएँ और रण-नीतियाँ तय की जाती, जिनके आधार पर दूसरे दिन के कार्य व्यवस्थित ढङ्ग से संचालित किये जाते। प्रगति धीमी थी, पर सन्तोषजनक थी। सुमित्रा ने बहुत काम किया। उसने अकेले ही लगभग एक हजार महिलाओं की एक मजबूत फौज खड़ी कर दी। इन श्रमिकाओं के चेहरों पर पहले जिन्दगी का नाम नहीं था, किन्तु अब उमंग और हंसी खिलखिलाने लगी थी। वे मिलकर काम करती और शोषण के विरुद्ध सम्मिलित ढङ्ग से आवाज भी उठाने लगी थी।

करमू तथा उनके साथियों ने मजदूरों को तंग करना बन्द कर दिया था। अब वे उल्टे अधिकारियों से ही बात-बात में भिड़ जाते। एक-एक दिन का वेतन संकलित कर इन लोगों ने अच्छी धनराशि भी जमा कर ली थी। बदली हुई स्थितियों का अनुभव मिल मैनेजर लम्बू साहब

बराबर कर रहे थे। किन्तु इसके मूल में कौन है, यह बात वे उसी समय समझ सके जब १६२० में मजदूरों ने हड़ताल प्रारम्भ कर दी।

मिल के गेट के सामने हजारों की संख्या में मजदूर खड़े थे। वे जोर-जोर से नारे लगा रहे थे—"हमारा शोषण बन्द करो। काम के घंटे कम करो। हमारा वेतन पूरा दो, हमें नियमित करो, हमें रहने के लिए मकान दो।" आदि आन्दोलनकर्ताओं का यह साहस और ये माँगें सुनकर मैनेजर, दीवान और दूसरे अधिकारी पहले तो सन्न रह गये। फिर उन्होंने सोचा कि मात्र डराने-धमकाने से काम चल जायेगा। अतः नौकरी से निकाल देने की धमकियाँ दी गई। जब उनका कोई असर नही पड़ा तब उन्होने भी हठ पकड़ ली—"हम इन मजदूरो को कुछ नही देंगे और इनके नायक प्यारेलाल को देख लेंगे।"

प्यारेलाल का टेंट मिल एरिया के पास ही गड़ा हुआ था। वहीं बैठकर वे आंदोलन का संचालन कर रहे थे। वे इस बात की विशेष सावधानी रखते कि मजदूर हिंसक न हो जायें। दिन-पर दिन गुजरने लगे। पैसो की अभाव मे कुछ मजदूरों की स्थिति डावांडोल होने लगी तो प्यारेलाल ने अपने कोष से उनकी सहायता प्रारम्भ कर दी पर किसी को काम पर नही जाने दिया सैंतीस दिनो के बाद लम्बू साहब का धैर्य टूट गया। उन्होने मजदूरों की अधिकांश माँगें मान ली। कुछ को पूरा करने के आश्वासन दिये और इस प्रकार हड़ताल समाप्त हो गई।

इस आंदोलन की चर्चा सम्पूर्ण देश मे फैल गई मजदूर-आंदोलन के इतिहास में यह भारत की सबसे पहली और सङ्गठित हड़ताल थी। इसका सारा श्रेय प्यारेलाल को दिया गया। दीवान ने क्रुद्ध होकर प्यारेलाल, रतनलाल और शिवप्रसाद को रियासत की सीमाओ से बाहर निकल जाने का आदेश दिया। प्यारेलाल ने इस सन्दर्भ मे एक लम्बा पत्र मध्यप्रदेश के गवर्नर जनरल को लिखा —

मान्यवर महोदय,

मैं नहीं जानता कि प्रशासन से सम्बन्धित आपके विचार क्या है ?

किन्तु मेरे विचार से प्रशासन जनता की उन्नति, सुरक्षा और कल्याण के लिए होता है। अगर इन उद्देश्यों की पूर्ति में शासन अक्षम सिद्ध होता है तो उसे या तो संशोधित किया जाता है या समाप्त कर दिया जाता है।

राजनांदगाँव रियासत के प्रशासन के सम्बन्ध में मेरा अनुभव यह है कि यहाँ के दरबारी लोग सारा कोष भोग-विलास में नष्ट कर रहे हैं और रियासत लाखों के ऋण में डूब चुकी है। अगर कोई व्यक्ति इस अत्याचार के विरोध में स्वर उठाता है तो पुलिस द्वारा उसे दंडित कराया जाता है। ऐसे व्यक्ति का नाम रियासत की काली पुस्तिका में दर्ज कर लिया जाता है और उसे रियासत छोड़कर बाहर चले जाने के लिए आदेशित किया जाता है। रियासती अधिकारियों के द्वारा ऐसे व्यक्तियों पर अत्यन्त कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाता है। वे किसी से बात तक नहीं कर सकते, किसी के साथ बैठ नहीं सकते। अपनी बातों को समाचार-पत्रों या भाषणों द्वारा भी प्रकट नहीं कर सकते। पुलिस के आतंक एवं दरबारियों के अन्यायपूर्ण रवैयों के कारण यहाँ की जनता उस स्वतन्त्र वातावरण में नहीं जी पाती, जो उसे पहले सुलभ था। सामान्य जनता के लिए किये जाने वाले कल्याणकारी कार्य भी अब बुरी तरह प्रभावित और उपेक्षित हो रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा जनता का नैतिक मनोबल भी अब गिरता जा रहा है।

आपको ज्ञात होगा कि "रियासत तथा मिल मैनेजर की शोषण-प्रवृत्तियों से बुरी तरह असन्तुष्ट होकर यहाँ के पाँच छह हजार मिल मजदूरों ने अभी सैंतीस दिनों तक हड़ताल की। उनकी न्यायोचित माँगों के समक्ष यहाँ के प्रशासन को झुकना पड़ा और उन्हें मजदूरों को उचित सुविधाएँ देने के लिए बाध्य होना पड़ा। किन्तु उसके फलस्वरूप हम तीन लोगों को निरपराध होते हुए भी यहाँ के प्रशासन ने तत्काल रियासत की सीमा छोड़कर चले जाने का आदेश दिया है। राजनांदगाँव हमारी

मातृभूमि है और मातृभूमि छुड़ाने का तथा यहाँ के हमारे नागरिक अधिकार छीनने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया जा सकता।

तत्कालीन गवर्नर सर फ्रैंक स्लाई ने स्थानीय पोलीटिकल एजेन्ट-क्राफर्ड को इस सम्बन्ध में लिखा कि उक्त आदेश तत्काल निरस्त किया जाये तथा प्यारेलाल एवं अन्य निष्कासित लोगों से क्षमा-याचना की जाये। फलतः उक्त आदेश वापस लिया गया और क्राफर्ड ने प्यारेलाल, शिव प्रसाद तथा रतन बाबू से क्षमा-याचना भी की।

•

आठ

•

उस समय स्टेट हाई स्कूल के सारे शिक्षकों को काले गाउन और केम्ब्रिज प्रोफेसर की काली, चपटी टोपी पहनकर आना अनिवार्य था। शिक्षकगण घर से तो सादी पोशाक में ही आते, पर स्कूल पहुँचकर उन्हें पहला काम करना पड़ता था गाउन और काली टोपी पहनने का। इस प्रकार की बीस ड्रेसें कलकत्ता से सिलकर आईं थी नाँदगाँव। श्रीविष्णु-राव ढोक, लीलाधर झा, रामाराव, सिराजुद्दी, पोपली, शिवकरण लाल आदि किसी भी शिक्षक को इससे कोई परेशानी नहीं थी, पर बख्शी जी ने आते ही दीवान साहब से साफ साफ कह दिया था कि "इस प्रकार की ड्रेस पहनकर मेरा नार्मल रह पाना सम्भव नहीं हो सकता। मैं तो छात्र-जीवन से धोती-कुरता पहनकर और उसके ऊपर शाल ओढ़कर काम करने का आदी हूँ। जब बनारस विश्वविद्यालय में पढ़ता था तब भी शाल ओढ़ता था। इसी ड्रेस में विश्वविद्यालय भी चला जाया करता था। यह शाल मेरी वेश-भूषा का सामान्य अंग है। भयानक गर्मी में भी मैं अपने से अलग नहीं कर पाता। अगर इसे धारण कर पढ़ाने की अनुमति आप देते हैं तो आपकी कृपा होगी अन्यथा यहाँ रहकर शिक्षण कार्य कर सकना मेरे लिए सम्भव नहीं होगा।" यह बात रानी साहिब

श्रीमती सूर्यमुखी देवी के पास तक पहुँची थी। उन्होंने आदेश भिजवाया—"बख्शी जी के लिए ड्रेस का बन्धन नहीं रहेगा।" अनुशासन के परम प्रतीक तम्बी साहब तो अचकचा गये थे इस आदेश से, पर चुप रह गये। उप प्राचार्य रामाराव ने उत्तेजित होकर कहा—"इस छूट का दुष्प्रभाव संस्था के छात्रों पर भी पड़ेगा। विद्यालय अनुशासन का मंदिर होता है, यहाँ एक नया युग, नया जीवन, नयी पीढ़ी और नये संस्कार गढ़े जाते हैं। कल ही यदि छात्र हड़ताल कर दें तब!" पर रानी साहिबा का आदेश था, उफान थोड़ी ही देर में शान्त हो गया।

बख्शी जी पढ़ाते थे—संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य। वे कहा करते थे—"जो पढ़कर फेंक दिया जाये वह साहित्य होता ही नहीं।" वे सारा पाठ विद्यार्थियों को कक्षा में ही याद करा देते थे। पुराना पाठ दुहरा भी देते थे। गधों के कान उमेठकर या पीठ गरम कर उन्हें आदमी भी बना दिया करते थे, पर हाथ कम ही उठाते थे। उनका उसूल था—छात्र प्यार के भूखे होते हैं, प्यार की भाषा उन्हें सदा याद रहती है। प्यार के अभाव में वे उद्दंड हो जाते हैं। अनुशासनहीनता तब उत्पन्न होती है जब उनके सुकोमल मानस पर आघात किया जाता है, उनका स्वाभिमान तोड़ा जाता है, उन्हें गुलामी का पाठ पढ़ाया जाता है। वे कहते, विद्या किसी की बपौती नहीं। वह तो साधना से प्राप्त होती है। एक लक्ष्मीपति का पुत्र जन्म से लक्ष्मीपुत्र होता है, पर सरस्वती के आराधक का पुत्र सरस्वतीपुत्र नहीं होता। फिर भी उस दिन बख्शी जी ने किशोरीलाल को झड़प दिया था—तुम, ब्राह्मण होकर भी यूसुफ से संस्कृत में कम अंक लाते हो? कैसे ब्राह्मण हो? किशोरी ने प्रतिवाद किया था—"मास्टर जी! आप यूसुफ को ज्यादा संस्कृत पढ़ाते हैं।"

बख्शी जी खुलकर हँसे थे। फिर कहने लगे, सुनो—

"एक यात्री भयानक जंगल के बीच से जा रहा था। दोपहर का समय, पत्थर को भी पिघला देने वाली कड़ी धूप। प्यास के कारण उसका कण्ठ सूख रहा था सौभाग्य से उसे पास ही एक कुआँ दिखाई

पड़ा। उसकी जगह पर एक बाल्टी भी रखी थी, पर रस्सी नदारत थी। वह दुखी हो गया। सोचने लगा, बिना रस्सी के पानी कैसे निकाला जाये? कुआं भी मिला तो इस तरह अभागा, फिर उसने सोचा कि यहां बाल्टी है तो निश्चित ही आस-पास कहीं कोई घर भी होगा, आदमी होंगे, रस्सी भी होगी। अगर मैंने उन्हें खोज लिया तो पानी अपने आप मिल जायेगा। कुआं भी तो कितना गहरा है। श्रम बच जायेगा।" वह आगे बढ़ गया।

कुछ देर बाद उसी स्थान पर एक दूसरा यात्री पहुँचा। वह भी प्यासा था। बाल्टी को देखकर वह प्रसन्न हो गया। सोचने लगा—पानी पीने का आधा प्रबन्ध हो गया, अब केवल थोड़ा-सा प्रबन्ध मुझे करना होगा। उस ईश्वर को धन्यवाद जिसने मेरी सहायता के लिए इतना सारा प्रबन्ध कर दिया। अगर इतना भी न करता तो मैं उसका क्या कर सकता था? मैं तो प्यासा था और कुआं मेरे सामने आ गया है। वह उत्साह से भर गया और आस-पास की घास तोड़कर रस्सी बनाने लगा। कुछ ही समय में उसने एक रस्सी बना डाली और बाल्टी से पानी बाहर निकालकर शांतिपूर्वक उसे पीया। उसका मन ही नहीं, आत्मा भी तृप्त हो गई। उसकी यात्रा का सारा श्रम समाप्त हो गया। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद उसने अपनी यात्रा नये ढङ्ग से, नये उत्साह से, नई प्रेरणा से प्रारम्भ की।

कुछ ही दूर जाने पर उसे पहला वाला पथिक मूर्छित अवस्था में रास्ते में पड़ा हुआ मिला। स्थितियाँ दोनों के लिए समान थीं, पर किशोरी तुम बताओ, ऐसा क्यों हुआ?

"पहला पथिक श्रम से कतराता था मास्टर जी।" किशोरी ने उत्तर दिया।

"तुम यूसुफ?" बख्शी जी ने पूछा।

"मास्टर जी, पहला पथिक परजीवी था। कुआं खोदकर पानी पीने का स्वाद वह जानता ही नहीं था।" यूसुफ अली ने उत्तर दिया।

"सो बात नहीं है बच्चो ! वस्तुतः पहले राहगी[illegible] [illegible]दीक्षा अधूरी थी । विद्या का अर्थ होता है मुक्ति प्रदान [illegible] [illegible] । अब तक कोई ज्ञान हमें दासता की जंजीरों से मुक्ति[illegible] [illegible] तब वह ज्ञान है ही नहीं । दासता मानसिक भी हो सकती है [illegible] [illegible]तिक, स्थूल सत्ता से सम्बन्धित भी । स्वतन्त्रता प्राप्त [illegible] [illegible], कु[illegible] नया सीखने की, कुछ करने की, कुछ बनने की प्यास ह[illegible] सम[illegible] रूप से विद्यमान है, पर जब तक हम प्यास की तृप्ति दूसरों [illegible] भरोसे करने का प्रयास करते रहेंगे तब तक हम स्वयं के लिए और समाज तथा देश के लिए बोझ ही बने रहेंगे । महाभारत में माता विदुला ने अपने पुत्र से कहा था— एक क्षण भी जिओ पर शत्रु के ऊपर वज्रपात बनकर गिरो । धीरे-धीरे सुलगते रहने, धुआं छोड़ते रहने की अपेक्षा अधिक अच्छा है कि अंगारे बनकर अपनी ऊष्मा से शत्रु के हृदय को दहला दो । जन्म लिया है तो मृत्यु निश्चित है । अतः शान से मरो । जीवन की तरह मृत्यु का भी पूरी तरह सम्मान करो । बच्चो ! तुम गुलाम बनाये रखने वाली शक्तियों पर क्रांति के उल्का बनकर बरसो । भविष्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है ।"

•

नौ

•

किशोरीलाल और यूसुफ अली कुछ दिन बाद विक्टोरिया पार्क के किनारे फूले अमलतास के नीचे खड़े होकर आपस में बातें कर रहे थे—

"उस दिन मास्टर जी की कहानी का आशय समझ गए थे किशोरी !" यूसुफ ने पूछा ।

"हां, अच्छी तरह । विद्यार्थी का अर्थ विद्या की अर्थी ढोने वाला

नहीं वरन् विद्या के द्वारा क्रान्ति लाने वाला है ! ज्ञान प्राप्त करने का आशय है व्यक्तित्व का रूपान्तरण। विद्या विलास का साधन नहीं है। वह युग की पुकार है।" किशोरी ने कहा।

"ठीक ही कहते हो दोस्त ! प्यारेलाल जी भी तो सदा यही दुहराते रहते हैं—'उत्तिष्ठित जाग्रत प्राप्त वरान्निबोधत' अर्थात् जागो, उठो और अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करो, क्योंकि क्रिया से ही कार्य की सिद्धि होती है।" यूसुफ ने उत्तर दिया।

"ठीक ही कह रहे हो तुम ! क्रिया से ही जीवन की प्यास बुझती है। क्रियाहीन तो रास्ते में मूर्छित होकर गिर जाया करते हैं।"

"तो अब इरादा क्या है तुम्हारा ?" यूसुफ ने पूछा।

"इरादा क्या हो सकता है। प्राचार्य अब्दुल रहमान खान ने तो साफ-साफ कह दिया है कि जो भी छात्र स्कूल की सीमा के बाहर पैर रखेगा, उसकी खाल खींच ली जायेगी। इतनी मार पड़ेगी कि स्वतन्त्रता और वंदे मातरम् का नाम भूल जायेगा।"

"क्या डर गये ?"

"तो फिर चलें। वकील साहब तो मजदूरों का बहुत बड़ा जुलूस लेकर कभी के स्टेशन चले गये हैं। गाड़ी आने में अब देर ही कितनी है ?"

"पर हम लोग दूसरे लड़कों की तरह चोरी-छिपे नही जायेंगे। मेरे पिता ने कहा है कि इस देश को स्वतन्त्रता कभी चोरी-छिपे नहीं मिल सकती।" किशोरी लाल ने कहा।

"पर चलें प्राचार्य को बता दें कि हम गांधी जी के दर्शन करने के लिए स्टेशन जा रहे हैं।" कहते हुए दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए मैदान में खड़े प्राचार्य के पास पहुँचे।

"क्या बात है किशोर ? चलो क्लास में बैठो।" खान साहब ने दहाड़ कर कहा।

"क्लास और स्कूल दोनों ही छोड़कर आपके पास आये हैं सर !" यूसुफ ने उत्तर दिया।

"किसलिए, क्या काम है ? अभी कोई सुनवाई नहीं हो सकती। जल्दी जाकर अपने रूम में बैठो, आज तुम लोगों की कोई बदमाशी बरदाश्त नहीं की जा सकती।" एक ही साँस में खान साहब ने कहा।

'सर ! देखिए, सामने गाड़ी आ रही है। उसमें इस देश के बहुत बड़े नेता आ रहे हैं—महात्मा गाँधी। उन्होंने कहा है कि इस देश की मुक्ति का एक ही रास्ता है। वह है, अंग्रेजों से असहयोग। क्या आप हमारा साथ नहीं देंगे।" किशोरीलाल ने पूछा।

"हम जानते थे, अच्छी तरह समझते थे कि तुम दोनों सारे स्कूल का वातावरण गंदा करोगे, अनुशासन और मर्यादा भंग करोगे, स्वतंत्रता की गंदगी फैलाओगे। हम तुम दोनो को पीटते-पीटते।" कहते हुए उन्होंने मारने को बेंत उठाया, तब तक किशोरी और यूसुफ स्कूल की सीमा लाँघ चुके थे।

इस घटना से खान साहब पर वज्रपात हो गया। उनके रोम-रोम मे दावानल सुलग उठा। वे मैदान से तत्काल अपने कार्यालय में आये। घंटी बजाई और चपरासी के आने के पूर्व ही अपनी कुर्सी से उठकर कक्षाओं की ओर चल दिये। सारे शिक्षकों को उन्होंने आदेश दिया कि जितने छात्र आज अनुपस्थित हैं, उनका नाम अपने रजिस्टर से काट दो। उनके गार्जियन को बुलाने के लिए अभी चपरासी भेजो और उनके नाम जारी पत्र में साफ-साफ लिख दो कि ऐसे देश-द्रोही लड़कों को यदि आपने अपने घरों में रखा तो रियासत और अंग्रेजों के कोप का भाजन बनना पड़ेगा। उसके क्या परिणाम होंगे, हम नहीं जानते। फिर उन्होंने सभी लड़कों को लाइन में खड़ा किया और जिसने गाड़ी आते समय उसकी ओर ताक-झाँक करने का प्रयत्न किया, ऐसे सभी छात्रों को दस-दस बेंत की सजा दी।

गांधी जी के आते ही राजनांदगांव का प्लेटफार्म जय-जयकारों से गूंज उठा। गांधी जी ने प्लेटफार्म पर उमड़ती भीड़ को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अपने तृतीय श्रेणी के डिब्बे के दरवाजे पर खड़े होकर कहा —

"देश की स्वतन्त्रता की प्राप्ति का लक्ष्य तुम सब नौजवानों के फौलादी संकल्पों पर निर्भर है। असहयोग आन्दोलन को सफल बनाने से ही हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। हम गुलामी को बढ़ावा देने वाली शासकीय नौकरी, दूषित शिक्षा-प्रणाली तथा ऐसे समस्त स्कूल-कालेजों को छोड़ें जहां गुलामी की शिक्षा दी जाती है। हम जानते हैं कि अंग्रेजी शासन एक बहुत बड़ी चट्टान की तरह हैं, इससे टकराने पर सिर फूटने की ही सम्भावनाएँ अधिक हैं, पर हजारों सिरों की टक्कर से यह चट्टान एक दिन निश्चित रूप से चूर चूर होकर रहेगी।" तभी इंजन ने सीटी दी और गाड़ी आगे चली गयी।

वातावरण में एक अजीब-सा जोश था। तूफानी उन्माद और आसमान को भी झुका देने की ताकत लोगों की मुट्ठियों मे बन्द थी। किशोर और यूसुफ स्टेशन से घर लौटने की बात सोच ही रहे थे कि स्टेशन के बाहर समुद्र की तरह उमड़ती भीड़ पर पुलिस ने लाठी चार्ज कर दिया। चीख-पुकार से सारा वातावरण भर गया। किसी तरह अपने को सुरक्षित बचाकर जब ये लोग घर पहुँचे तो इनके परिवार वालों ने बिना दरवाजा खोले ही उत्तर दिया, "आज से तुम्हारा इस घर से पूरा सम्बन्ध टूट गया है। भूल जाओ कि तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन भी थे। अंग्रेजों के कोप के कारण अब तुम भविष्य में भी कभी इस घर में भूलकर कदम मत रखना।"

किशोर और यूसुफ को लगा जैसे उनका भविष्य सहसा अंधकारमय हो गया है। पर वे सोच रहे थे कि ठीक दोपहर के समय जीवन का सूर्य अस्त हो कैसे सकता है।

निरपराध छात्रों को स्कूल से निकाल देने तथा शान्त जनता पर

लाठी चार्ज करने के विरोध में प्यारेलाल ने उस दिन शाम को शहर में एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला और गोल बाजार में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "भाइयो और बहनो! तुम सब ने गुलामी का आलम देखा। गाँधी जी के दर्शन करने को अपराध मानकर पुलिस के द्वारा किया जाने वाला नृशंस लाठी-चार्ज भी देखा। इसमें हमारे अनेक भाई घायल हुए हैं। छात्रों पर भी स्कूल में अत्याचार किया गया है। उन्हें दस-दस बेंत केवल इसलिए मारे गये क्योंकि उन्होंने गाड़ी की ओर देखने का साहस किया था। जो छात्र स्टेशन गए थे या अनुपस्थित थे, उनका नाम काट दिया गया है और उन्हें अपने घरों से भी सदा सदा के लिए निकाल दिया गया है। क्या हम सबका जीवन इसीलिए है? क्या हम इतने पंगु हैं कि मुंह से आह तक न कर सकें? इस तानाशाही से टक्कर लेनी ही होगी।

"हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि जिन छात्रों को स्कूल से निकाला गया है, उनकी शिक्षा बन्द नहीं होगी। हम उनके लिए यहाँ कल से ही एक राष्ट्रीय विद्यालय खोल रहे हैं। हम खुद उन सभी सड़े-गले शिक्षा संस्थानों को छोड़ देने की सलाह देते हैं जहाँ गुलामी पढ़ाई जाती है। हम अंग्रेजों और यहाँ के रियासती अधिकारियों को यह अच्छी तरह बता देना चाहते हैं कि हमारी तरुण पीढ़ी उनके टुकड़ों पर नहीं पलेगी। हम उन्हें वह तालीम देंगे जो उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व को राष्ट्रीय स्तर पर समुन्नत करेगी। मैंने श्री बलदेव प्रसाद मिश्र से बात कर ली है। वे इस राष्ट्रीय विद्यालय के प्रथम प्राचार्य होंगे। इस विद्यालय के साथ-साथ छात्रावास भी होगा और उसमें उन सभी छात्रों को निःशुल्क स्थान दिया जायेगा जो स्कूल छोड़कर इस विद्यालय में पढ़ने के लिए आना चाहते हैं। राष्ट्रीय विद्यालय ही वर्तमान शिक्षा का विकल्प है। यह युग की माँग है, युवा पीढ़ी का भविष्य है, देश की आजादी की नींव का पत्थर है। यह नूतन शिक्षा ही क्रांति की प्रथम पाठशाला है।" प्यारेलाल के जोशीले भाषण की समाप्ति पर आकाश

तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया। किशोर और यूसुफ को लगा कि जीवन का सूर्य अस्त कैसे हो सकता है, अभी तो वह उदित ही हुआ है।

राष्ट्रीय विद्यालय के लिए निःशुल्क एक भवन मिल गया और रहने के लिए कुछ कमरे भी उपलब्ध हो गये। थोड़े ही समय में छात्रों की संख्या बढ़कर ७०-८० के लगभग पहुँच गई। इनमें से अधिकांश छात्र छात्रावास में ही रहने लगे थे। उनके खाने-पीने की समस्याएँ बढ़ीं। संस्था के उद्घाटन के अवसर पर पं० मिश्र ने छात्रों का स्वागत करते हुए कहा—"मेरे देश के होनहार नागरिक बच्चो! इस राष्ट्रीय विद्यालय में तुम सबका स्वागत करते हुए मुझे कितनी खुशी हो रही है, इसका अनुमान तुम नहीं लगा सकते। वस्तुतः तुम सब इस देश के सौभाग्यशाली छात्र हो शिक्षा वही है जो मनुष्य को सारे बन्धनों से मुक्त कर दे। तुम सबने आज गुलामी के सारे बन्धनों को तोड़ डाला है और एक स्वतन्त्र वातावरण में राष्ट्रीय शिक्षा ग्रहण करने के लिए यहाँ एकत्र हुए हो। यह सच है कि हमारे पास आवश्यक साधनों की भी कमी है पर यह शुभ लक्षण है कि हमारे पास चट्टानी संकल्प है। हम विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने में सक्षम हैं। यहाँ तुम्हें पढ़ना भी है और अपने से छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों को पढ़ाना भी है और गुरुकुल व्यवस्था के अनुसार घर-घर दान लेकर अपनी आर्थिक क्षमता को बढ़ाना भी है। 'अर्न एण्ड लर्न' की पद्धति ही हमारी संस्था की बुनियाद है।

श्री प्यारेलाल ठाकुर ने मुट्ठी-फंड की योजना भी लागू करने का सुझाव दिया है। यह बहुत ही विवेकसम्मत योजना है। हम मिट्टी के एक-एक पात्र किसानों, मजदूरों, सेठों, सामंतों और छात्रों के घरों में जाकर रख आयेंगे और उनसे निवेदन करेंगे कि प्रतिदिन अपने खाने की सामग्री में से केवल एक मुट्ठी अनाज इसमें डाल दें। सप्ताह के अन्त में हम उस सामग्री को एकत्र कर लेंगे और उससे अपनी संस्था का कार्य चलाएँगे। एक मुट्ठी अनाज कोई भी दे सकता है, वह किसी के लिए बोझ नहीं बन सकता!"

विद्यालय चल निकला। यद्यपि कठिनाइयाँ तरह-तरह की आयीं पर मिश्र जी ने उन्हें अपनी समझ-बूझ से हल किया। किशोर मुट्ठी-फंड योजना के संयोजक चुने गये थे। उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि लोग शासन तथा रियासत की दृष्टि में इन देशद्रोही छात्रों को एक मुट्ठी अनाज देने में भी कतराते हैं। बूढ़े-सयाने कह भी देते, "बच्चे, तुम्हारा काम पढ़ना है, विद्यालय चलाना नहीं। गाँधी जी तुम सबको गुमराह कर रहे हैं। इस तरह भला कहीं स्वतन्त्रता मिलती है? यह राजनीति और देश-प्रेम तुम्हें कहीं का नहीं रहने देगा। मूर्खताओं का मेला मत लगाओ। प्राचार्य से क्षमा-याचना कर लो, वे गुरुजन हैं, क्षमा उनकी शोभा है। तुम्हारे इस विद्यालय में क्या रखा है? केवल राष्ट्रीय शब्द से कल्याण नहीं होने का। खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मत पटको। पहले कुछ लिख-पढ़ लो, फिर राजनीति खेलना। मुट्ठी भर अनाज के बदले इतना सारा उपदेश देने वालों की कमी नहीं थी। अतः यूसुफ ने कहा, किशोर, इस योजना में तो हमारे हाथ कोरे उपदेश ही लग रहे हैं! चलो कोई नया कार्य प्रारम्भ किया जाये और दोनों ने सीप के बटन बनाने का कार्य प्रारम्भ किया।

कुछ छात्र नगर से तीन मील दूर शिवनाथ नदी की रेत से सीपियाँ एकत्र करते, फिर उन्हें घिस-घिसकर बटन बनाये जाते। एक दिन में दस-बारह दर्जन बटन बन जाते। फिर उन्हें बाजार में बेचा जाता। दो-तीन माह यह क्रम चला पर इसमें मेहनत अधिक थी, उसकी तुलना में लाभ कम था। अतः यूसुफ ने तब छात्रावास में ही साबुन बनाने का कारखाना खोला—राष्ट्रीय साबुन! इसमें अपेक्षाकृत श्रम कम था और लाभ अधिक छात्रों को पढ़ने के लिए समय भी बच जाता था।

राष्ट्रीय विद्यालय को आर्थिक दृष्टि से समर्थ बनाने के लिए पं० बलदेव प्रसाद मिश्र भी गाँव-गाँव जाकर भागवत-पारायण कर रहे थे। नवागाँव में उन्होंने कहा—"बहनो और भाइयों! इस भूमि में कभी राम हुए तो कभी कृष्ण। जब-जब देश में अन्याय, अत्याचार बढ़ते हैं तब-तब

भगवान मनुष्य-रूप में अवतार लेते हैं। उनके जन्म का मूल कारण होता है जनता की सेवा, गौ-ब्राह्मणों की रक्षा और लोक-धर्म की स्थापना। आज हमारा धर्म धीरे-धीरे भ्रष्ट होता जा रहा है। उस पर पाश्चात्य धर्मों का प्रभाव पड़ रहा है। अंग्रेजों ने न केवल हमें प्रशासनिक दृष्टि से वरन् धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी गुलाम बना लिया है। सदियों की गुलामी के कारण अब हमें यह गुलामी ही अच्छी लगने लगी हैं। इसने हमारा विवेक भी कुण्ठित कर दिया है। कृष्ण ने असत्य पर सत्य की विजय के लिए महाभारत किया था। आज भी गुलामी अर्थात् असत्य का शासन है। हमें भी इस शताब्दी का एक बहुत बड़ा महाभारत लड़ना है। वह प्रारम्भ भी हो चुका है। आपको याद होगा कि महाभारत में श्रीकृष्ण सत्य पक्ष के सारथी और पथ प्रदर्शक थे। उनके हाथ में शस्त्र नहीं थे, केवल बागडोर थी। लगभग ऐसी ही बागडोर आज हमारे देश के महान संत महात्मा गाँधी के हाथों में है। उन्होंने भी शस्त्र के मार्ग का त्याग कर दिया है, वे न्याय और सत्य की विजय के लिए यह महायुद्ध कर रहे हैं।"

फूलपुर के ग्रामवासियों से उन्होंने कहा—"माताओं और भाइयों! भागवत का अर्थ है परम शक्ति, ईश्वर या परमात्मा। भागवत में श्रीकृष्ण उसी भागवत सत्ता के प्रतीक हैं। वही हमारी स्वतन्त्र बुद्धि, प्रज्ञा, विवेक और आत्मा के प्रतीक हैं। कृष्ण का अर्थ है—सम्पूर्ण भारतीय चेतना या संस्कृति। पाँच पाण्डव हमारी पाँच कर्मेन्द्रियों या ज्ञानेन्द्रियों के प्रतीक हैं। इन्हीं के सारथी हैं कृष्ण! कृष्ण को प्राप्त करने का अर्थ है जीवन के सत्य, शुभ और सुन्दर तत्वों की प्राप्ति। उनके प्रति भक्ति-भावना का अर्थ है राष्ट्रीय भावना का विकास करना। दुर्योधन, दुःशासन ये सब गुलामी, असत्य और अत्याचारों के प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण के जन्म का उद्देश्य है जीवन की इन विषमताओं को नष्ट करना। पिछला महाभारत १८ अक्षोहिणी सेना के मध्य लड़ा गया था, किन्तु इस नये महाभारत में इस देश का हर नागरिक भाग लेगा और

युद्ध हर गाँव हर गली में लड़ा जायेगा। भागवत की कथा सुनना तभी सार्थक माना जायेगा जब हम इस महाभारत में भाग लेने के लिए अपने को तैयार करें, जीवन के अर्थ, धर्म, कर्म और मोक्ष को प्राप्त करने का संकल्प करें।

चार-पाँच महीनों तक राष्ट्रीय विद्यालय का कार्य बहुत अच्छी तरह से संचालित किया गया। बाद में गांधी जी के आदेश से ऐसी संस्थाओं को बन्द कर दिया गया। शासन ने भी राष्ट्रीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को अपनी ओर से क्षमा प्रदान कर उन्हें पुराने विद्यालयों में प्रवेश दे दिया।

राष्ट्रीय विद्यालय का समापन समारोह धूम-धाम से आयोजित किया गया था। ठाकुर प्यारेलाल मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर शहर के प्रतिष्ठत नागरिक और हजारों की संख्या मे छात्रगण भी उपस्थित थे। प्यारेलाल ने कहा था—"बन्धुओं! राष्ट्र के सङ्कट की घड़ी में आप सबने जो संकल्प एकता, आत्मनिर्भरता और उत्साह प्रस्तुत कर एक नया आदर्श देश के सामने रखा है, वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र की शक्ति और क्षमता का प्रतीक है। यह पावन-ज्योति भविष्य में आने वाले तूफानों में अक्षय बनी रहे, हमारे, सारे प्रयत्न इसी दिशा में होने चाहिए। हमारा जन्म विधाता ने आराम करने या गुलामी का नरक भोगते रहने के लिए नहीं दिया है। उसका हिमालय से भी ऊँचा उद्देश्य है और यह है देश को स्वतन्त्र बनाना, आत्मनिर्भर बनाना, आत्म-सम्मानपूर्ण ढंग से जीवन जीना। हमारे जीवन का हर क्षण इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति करने में व्यतीत हो, हमें ऐसे ही उद्यम करने में व्यतीत हो, हमें ऐसे ही उद्यम करने हैं।

राष्ट्रीय विद्यालय का आदर्श देश को स्वतन्त्र शिक्षा-दीक्षा का पहला सोपान है। यह नींव है, हमारे भविष्य का मन्दिर इसी भूमिका पर निर्मित होगा। अन्यायों के विरुद्ध उठे हुए आपके हर कदम के साथ मेरा भी कदम होगा। भारत माँ आपकी पग-ध्वनियाँ सुन रही हैं। वह